तमसो मा ज्योतिर्गमय

# शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-7, अंक- 10-11, सितंबर-अक्टूबर 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

**शिक्षक से बढ़कर नहीं, इस दुनिया में खास**
**जब अँधियारा घेर ले, शिक्षक बनता आस**

# बिना पंख परवाज़ दे ऐसा गुरु का ज्ञान

आदर करते जो सदा, ईश गुरु को मान ।
सदा सफलता का उन्हें, मिलता है वरदान ।।

शिक्षक से बढ़कर नहीं, इस में दुनिया में खास ।
जब अँधियारा घेर ले, शिक्षक बनता आस ।।

छोटे बालक भी भरें, ऊँची बहुत उड़ान ।
गुरुवर देता है उन्हें, जब शिक्षा का ज्ञान ।।

सफल हुई है ज़िन्दगी, ऐसा दिया तराश ।
ज्ञान गुरु से पा उड़े, नाप रहे आकाश ।।

नन्हे मुन्ने बाल भी, ऊँची भरें उड़ान ।
बिना पंख परवाज़ दे, ऐसा गुरु का ज्ञान ।।

भेद कभी करता नहीं, देता सबको ज्ञान ।
ऐसे गुरु को पूजता, खुद अपना भगवान ।।

गुरु बिना होता नहीं, बेड़ा कोई पार ।
हाथ गुरु सर पर रखें, खिल उठता संसार ।।

सदा झुकें सम्मान से, रखते में दिल भाव ।
कभी नहीं है डूबती, उन शिष्यों की नाव ।।

**श्रीभगवान बव्वा**
**प्रवक्ता अंग्रेजी**
**राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय**
**लुखी, रेवाड़ी**

तमसो मा ज्योतिर्गमय

# शिक्षा सारथी

सितंबर-अक्टूबर 2019

**प्रधान संरक्षक**
मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री, हरियाणा

**संरक्षक**
रामबिलास शर्मा
शिक्षामंत्री, हरियाणा

**मुख्य संपादक**
डॉ. महावीर सिंह
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

**संपादकीय परामर्श मंडल**
डॉ. राकेश गुप्ता
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. बलकार सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

**संपादक**
डॉ. देवियानी सिंह

**उप-संपादक**
डॉ. प्रदीप राठौर

**डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग**
हरियाणा संवाद सोसायटी

**मूल्य:** 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> पहले वे आप पर ध्यान नहीं देंगे, फिर वे आप पर हंसेंगे, फिर वे आप से लड़ेंगे और तब आप जीत जायेंगे
> - मोहनदास कर्मचंद गाँधी

» रेवाड़ी के राजेश कुमार को 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' 5
» ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण के साथ चरित्र निर्माण भी आवश्यक : राज्यपाल 6
» बापू की 150वीं जयंती को अनूठे अंदाज़ में मनाया 12
» कैसे हों शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध? 14
» देश की शान है हिन्दी 17
» मल्लाह की वादियों में एडवेंचर कैम्प 18
» खेल-खेल में विज्ञान 22
» किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम : एक महत्त्वपूर्ण पहल 24
» चित्रभाषा 25
» विज्ञान विषय को सही मायने में जीते हैं सत्यपाल सिंह 26
» एक कुशल चित्रकार है कैथल की शोभा 27
» बाल सारथी 28
» बच्चे से भावात्मक रूप से जुड़ें 31
» Choosing among children Early childhood investments.... 32
» ATAL TINKERING LABs 36
» Experience hard moments to bring out the Best 40
» THE CHERRY TREE 42
» Weather and Climate Quiz 44
» Sports Quiz 46
» Amazing Facts 48
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

# गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की ओर बढ़ता हरियाणा

नीति आयोग स्कूली शिक्षा में राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए विश्व बैंक और अन्य तकनीकी विशेषज्ञों की मदद से 'स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स' तैयार करता है, ताकि राज्यों को शिक्षा के क्षेत्र में उनकी ताकत व कमजोरियों की पहचान कराकर अपेक्षित सुधारों के लिए प्रेरित किया जा सके। लर्निंग आउटकम सहित 30 मानकों के आधार पर उसके द्वारा तैयार की गई 30 सितंबर को आई। यह रिपोर्ट स्पष्ट संकेत कर रही है कि हरियाणा स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में जबरदस्त ढंग से सुधार करते हुए आगे बढ़ रहा है। केरल व तामिलनाडू के बाद हरियाणा पूरे देश में तीसरे स्थान पर है। यानी प्रदेश में शिक्षा सुधार के उठाये गए कदमों के सकारात्मक परिणाम दिख रहे हैं। गौरतलब है कि पिछले वर्ष की रिपोर्ट में हरियाणा 51.0 प्रतिशत अंकों के साथ आठवें स्थान पर था, जबकि इस बार 5 पायदानों की छलांग लगाते हुए 69.5 प्रतिशत अंकों के साथ व तीसरे स्थान पर पहुँचा है।

इस समय प्रदेश में विद्यार्थियों का नामांकन बढ़ाने, उन्हें आधारभूत सुविधाएँ देने के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर काफी फोकस किया जा रहा है। 'सक्षम' कार्यक्रम भी इसी दिशा में आरंभ किया कार्यक्रम है जो सीखने और सिखाने के तंत्र में अभूतपूर्व सुधार लेकर आया है। अब प्रदेश ने सक्षम प्लस और सक्षम 2.0 की ओर कदम बढ़ाए हैं। नीति आयोग हमारे कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा है। दूसरे राज्य हमारा अनुसरण कर रहे हैं। वास्तव में राजनीतिक इच्छा-शक्ति, प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा बनाई जा रही प्रभावी क्रियान्वन नीतियों, अधिकारियों के प्रेरणा भरे नेतृत्व के साथ-साथ हमारे अध्यापकों की परिश्रम से ही यह संभव हुआ है कि हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षण के क्षेत्र में तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। इस माह हमारे दूसरे राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती भी है जिसे हम पूरे सम्मान के साथ 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर शिक्षक समाज को अनेकानेक शुभकामनाएँ।

**-संपादक**

# रेवाड़ी के राजेश कुमार को 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार'

**माँ के साथ शिक्षक ने 25 गाँवों को बनाया प्लास्टिक मुक्त, राष्ट्रपति ने 'शिक्षक दिवस' पर किया सम्मानित**

शिक्षा में नवोन्मेष के साथ गुणवत्तापूर्ण अध्यापन के लिए शिक्षक दिवस पर देश के 46 शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी ख़ास मौके पर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विज्ञान भवन में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से 46 शिक्षकों को सम्मानित किया है। जिसमें जम्मू कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड के साथ-साथ अन्य राज्यों के शिक्षक शामिल हैं।

हरियाणा के रेवाड़ी के मोहनपुर बवाल के गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल में हिंदी शिक्षक राजेश कुमार ने अपनी 75 वर्षीय माँ बनारसी देवी की मदद से अपने स्कूल और आसपास के 25 गाँवों को प्लास्टिक मुफ्त कर दिया। वह बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने के साथ ग्रामीणों को स्वच्छ भारत अभियान से जोड़ रहे हैं। राजेश दुकानदारों से बचे थान (रनिंग मैटेरियल) का कपड़ा एकत्रित कर अपनी माँ को देते और वह उनसे छोटे-बड़े थैले सिलती हैं।

थैले के पीछे हिंदी में स्वच्छ भारत का संदेश होता है। कपड़े के यह थैले ग्रामीणों को मुफ्त में देते हैं, ताकि वह प्लास्टिक, पॉलिथीन का प्रयोग न करें। स्कूल और समाज को बदलने की इसी सोच के लिए राजेश कुमार को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने शिक्षक दिवस पर 'नेशनल टीचर अवार्ड-2019' से सम्मानित किया।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से यह सम्मान प्राप्त करने दिल्ली पहुँचे राजेश कुमार ने बताया कि उन्होंने हिंदी मीडियम से पढ़ाई की है। अब लोग हिंदी मीडियम को तवज्जो नहीं देते और न ही अपने बच्चों को ऐसे स्कूलों में दाखिला दिलवाना चाहते हैं। समाज की इसी सोच को बदलने के लिए उन्होंने अपने खर्चे से स्कूल में हिंदी लैब बनायी है। जहाँ हिंदी की आसान भाषा में सहायक शिक्षण सामग्री तैयार की। स्कूल के शिक्षक और छात्र इसी से हिंदी पढ़ते हैं।

राजेश बताते हैं कि उनके प्रयोग से बच्चों में पढ़ाई के प्रति दिलचस्पी बढ़ी, यही वजह है कि पिछले 15 साल से स्कूल का रिजल्ट सौ फीसदी है।

2005-06 में वहाँ 107 छात्र पढ़ते थे, अब उनकी संख्या साढ़े तीन सौ पार कर चुकी है। ईंट-भट्टों में काम करने वाले मजदूरों के 90 बच्चों को उन्होंने अपने प्रयासों से शिक्षा से जोड़ा है। -साभार अमर उजाला

## दो साल तक शौचालय की सफाई

राजेश के मुताबिक, निजी कंपनी की मदद से स्कूल में दो शौचालय बनाए गए थे। लेकिन कुछ समय बाद सफाई कर्मी का देहांत हो गया। अब शौचालय की सफाई कैसे की जाए, इसी दुविधा के बीच उन्होंने दो साल के लिए शौचालय गोद ले लिया। प्रतिदिन कक्षा में जाने से पहले दोनों शौचालय की सफाई करते और जरूरत होने पर काम के लिए बीच में भी जाते थे। उनकी इसी सोच ने ग्रामीणों में स्वच्छ भारत का भावना जागृत की।

# ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण के साथ चरित्र निर्माण भी आवश्यक : राज्यपाल

## 39 शिक्षकों को शिक्षक सम्मान, पहली बार हरियाणवी कला व संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 'पण्डित लखमीचंद अवार्ड'

**डॉ. प्रदीप राठौर**

हरियाणा के राज्यपाल श्री सत्यदेव नारायण आर्य ने अध्यापकों का आह्वान किया कि 21वीं सदी में वे बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ चरित्र निर्माण की शिक्षा भी दें ताकि भारत वर्ष को फिर से विश्व गुरु का दर्जा मिल सके।

श्री आर्य शिक्षक दिवस के अवसर पर हरियाणा राजभवन में हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग की ओर से आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। इस अवसर पर राज्यपाल ने प्रदेश के 39 शिक्षकों को शिक्षक सम्मान और कलाकार महाबीर गुडडू को हरियाणवी कला व संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पण्डित लखमीचंद अवार्ड से भी सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षा मंत्री प्रो. राम बिलास शर्मा ने की।

समारोह को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि वास्तव में अध्यापक ही राष्ट्र-निर्माता होता है। शिक्षक ही राजनेता, समाजसेवक, प्रशासक, विज्ञानवेता, सैनिक, तकनीशियन आदि का निर्माण करता है। उन्होंने कहा कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिवस, 5 सितम्बर को देशभर में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे महान शिक्षक, चिन्तक, दार्शनिक और विद्वान थे। शिक्षक दिवस राष्ट्र के नवनिर्माण में अध्यापकों की भूमिका की समीक्षा का अवसर भी प्रदान करता है।

राज्यपाल श्री आर्य ने सम्मानित होने वाले अध्यापकों को बधाई व अध्यापक दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि 'आप अन्य अध्यापकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं, इसलिए मेरा अनुरोध है कि आप ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का

स्तर बेहतर करें ताकि दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों को भी गुणवत्तापरक शिक्षा मिल सके। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने भी शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए समाज को 'शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो' का सूत्र दिया।

उन्होंने कहा कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सर्व-शिक्षा अभियान की शुरूआत की थी। उन्हीं के इस अभियान को आगे बढ़ाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ''न्यू इंडिया'' की परिकल्पना की और 'स्किल इंडिया' का नारा दिया। स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए 'नेशनल वोकेशनल एजुकेशनल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क' योजना चलाई गई है। इस योजना को लागू करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य है।

श्री आर्य ने राज्य सरकार की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने प्रदेश में नैतिक मूल्यों व चरित्र निर्माण पर आधारित शिक्षा की व्यवस्था की है। इसे मूर्त रूप देने के लिए शिक्षा मंत्री श्री राम बिलास शर्मा भी बधाई के पात्र हैं।

शिक्षा मंत्री प्रो. राम बिलास शर्मा ने कहा कि शिक्षा, संस्कार तथा संस्कृति में भारत की पूरी दुनिया में प्रतिष्ठा है। गुरुजन का सदा से इस देश में ऊँचा दर्जा रहा है। यहाँ कहा जाता रहा है -गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः। कबीर जी ने भी तो कहा था- गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय। बलिहारी गुरु आपने, जो गोविंद दियो बताय।

उन्होंने कहा कि आज भी पूरी दुनिया यह मानती है कि अगर अध्यापक पर छात्र की श्रद्धा नहीं है तो वह उस से सीख नहीं सकता। किसी समय में भारत विश्व गुरु कहलाता था, आज फिर से वही गौरव यात्रा हरियाणा ने शुरू की है। राज्य के सरकारी स्कूलों में नई पीढ़ी को देश की प्राचीन संस्कृति से अवगत करवाने के उद्देश्य से 'गीता' को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। उन्होंने कहा गीता हमारा जीवन दर्शन है। गीता भारत का गीत है, गीता भारत की प्रीत है, गीता ज्ञान है, गीता विज्ञान है, गीता शंका है, गीता ही समाधान है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहले 11 अध्यापकों को राज्यस्तरीय पुरस्कार दिए जाते थे, वहीं वर्तमान में 39

## क्या दिया जाता है पुरस्कार में

- प्रशस्ति-पत्र
- 21 हजार रुपए की नकद राशि
- शॉल व स्मृति चिह्न
- संपूर्ण सेवा-काल के लिए दो वेतन-वृद्धियाँ
- दो वर्ष की सेवा-वृद्धि का लाभ

## इन्हें 'राज्य शिक्षक पुरस्कार' से नवाज़ा गया

1. जयपाल दहिया, प्रधानाचार्य, जीएमएसएसएस सांघी, रोहतक
2. अश्विनी कुमार, प्रधानाचार्य, जीएसएसएस धुलेडा, महेंद्रगढ़
3. अशोक कुमार,पीजीटी संस्कृत जीएचएस बादल, भिवानी
4. सुरेंद्र सिंह, पीजीटी बायोलॉजी, जीएसएसएस, जहाजपुल हिसार
5. सुखविंदर कौर, पीजीटी फिजिकल शिक्षा, जीएसएसएस गंगवा, हिसार
6. ममला राम, पीजीटी हिंदी जीएसएसएस कलीराम, कैथल
7. सुरेश कुमार, पीजीटी हिन्दी,जीएसएसएस बाटला, कैथल
8. अरविंद कुमार, पीजीटी फिजिक्स, सार्थक जीआईएमएसएस, सैक्टर -12-ए पंचकूला
9. राजबाला, ईएसएचएम, जीएमएस, हरसिंहपुरा, करनाल,
10. वीरेंद्र सिंह, ईएसएचएम, जीएमएस, केमला ब्लॉक कनीना, महेंद्रगढ़
11. सुदर्शना देवी, ईएसएचएम जीएमएस अभयपुर, पंचकूला
12. अजय सिंह ईएसएचएम,जीएमएस भटसाना, रेवाड़ी
13. उर्मिला देवी, टीजीटी संस्कृत, जीएमएस, ढाणी रहीमपुर, लोहारू, भिवानी
14. पवन कुमार वत्स, टीजीटी संस्कृत, जीएचएस, रावलवास खुर्द, लौहारु
15. हरेंद्र सिंह, टीजीटी सामाजिक अध्ययन, जीजीएचएस, मानकवास चरखी दादरी
16. जगबीर सिंह, टीजीटी सामाजिक अध्ययन,जीएमएस कुंडल रेवाड़ी
17. जयवीर सिंह, टीजीटी हिन्दी, जीएचएस, शेखपुरा हिसार
18. कुलदीप सिंह, टीआरटी हिन्दी, जीएसएसएस मुरथल, सोनीपत
19. बिक्रम सिंह, टीजीटी मैथ, जीएचएस कटवाल, सोनीपत
20. राजेन्द्र शर्मा टीजीटी मैथ,जीएमएस डुमरा कैथल
21. सुनीता टीजीटी विज्ञान, सार्थक, जीआईएमएसएसएस, सैक्टर-12-ए, पंचकूला
22. ओम प्रकाश, टीजीटी विज्ञान, जीएमएस कुंडल, रेवाड़ी
23. भूपेंद्र सिंह, टीजीटी विज्ञान, जीएसएसएस, राजगढ़, रेवाड़ी
24. वंदना खटकर, टीजीटी विज्ञान, जीजीएसएसएस, नाहरा, सोनीपत
25. ओम प्रकाश पीटीआई, सार्थक जीआईएमएसएस, सैक्टर -12 ए पंचकूला
26. राजकुमार, प्रमुख शिक्षक ,जीपीएस सीमला कैथल
27. मोहम्मद फ़ारूक़, प्रमुख शिक्षक ,जीपीएस नीमका, मेवात
28. उषा गुप्ता, हेड टीचर जीपीएस, सूरजपुर, पंचकूला
29. आशा रानी, प्रमुख शिक्षक ,जीपीएस, भाकली, रेवाड़ी
30. दारा सिंह, पीआरटी,जीपीएस, गोविंदपुरा, चरखी दादरी
31. महाबीर प्रसाद, पीआरटी जीपीएस, भिरडाना, फतेहाबाद
32. विनोद कुमार पीआरटी, जीपीएस, नया गाँव, सोहना, गुरुग्राम
33. सुशील कुमार, पीआरटी, जीपीएस, सीढा माजरा, जींद
34. डॉ. कविता, पीआरटी, जीजीपीएस, संघन, कैथल
35. प्रमिला, पीआरटी, जीपीएस, बुचावास महेंद्रगढ़
36. राजेश कुमार, पीआरटी, जीपीएस मदनपुर, पंचकूला
37. भूदत्त शर्मा, पीआरटी, जीपीएस भाकली, रेवाड़ी
38. प्रतिभा, पीआरटी, जीजीपीएस, मॉडल टाउन, रोहतक
39. सुनीता छिक्कारा, पीआरटी, जीएमएस, रेवली, सोनीपत

अध्यापकों को शिक्षक सम्मान से पुरस्कृत किया गया, जबकि कलाकार महाबीर गुडडू को हरियाणवी कला व संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पण्डित लखमीचंद अवार्ड से सम्मानित किया।

उन्होंने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने जन्मदिन को अध्यापक दिवस के रूप में मनाया. एपीजे अब्दुल कलाम साहब को जीवन भर अपना परिचय एक प्रोफेसर के रूप में देने में ख़ुशी होती थी।

उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को अपने कर्तव्य बोध का स्मरण भी कराया। उन्होंने कहा कि बदलते समय में बच्चा घर में अकेला रह गया है। माता-पिता अपनी व्यस्तताओं के कारण बच्चों को यथोचित समय नहीं दे पा रहे हैं। इस कारण अध्यापक की जिम्मेदारी और बढ़ गयी है। उन्होंने कहा कि अध्यापक शिक्षण के साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को विस्तार दें। उन्होंने कहा कि आज विद्यार्थी उसी अध्यापक का सम्मान करते हैं जो अपने विषय में पारंगत है, जो अपने ज्ञान को अद्यतन रखता है।

कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव डॉ. महावीर सिंह ने विभाग की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए इस अवसर पर पुरस्कृत शिक्षकों को बधाई दी। उन्होंने बताया कि 'सुपर-100' कार्यक्रम के माध्यम से मेधावी विद्यार्थियों को जेईई/नीट की निःशुल्क कोचिंग दी जा रही है। हरियाणा के 36 खण्डों में चल रहे आरोही विद्यालयों में मौजूदा सत्र से एक और महत्त्वपूर्ण फैसला लेते हुए इन विद्यालयों में कक्षा 9 से 12 की बजाए कक्षा 6 से 12 की कक्षाएँ चलाए जाने का निर्णय लिया गया है। राज्य में चल रहे 32 कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालयों को अपग्रेड करके 12वीं तक किया जा रहा है। पौधारोपण अभियान के अन्तर्गत बड़ी संख्या में प्रदेश के बच्चों के साथ जोड़ा गया है। इनकी जियो-टैगिंग कराई जा रही

है। पौधों के संरक्षण के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। खेलों, सह-शैक्षिक और रोमांचकारी गतिविधियों में हमारे विद्यार्थी सराहनीय प्रदर्शन कर रहे हैं। गत वर्ष राजधानी दिल्ली में आयोजित' खेलो इंडिया स्कूल गेम्स' में हरियाणा के अंडर-17 खिलाड़ियों ने 102 पदक जीतकर देश में सर्वोच्च स्थान हासिल किया।

उन्होंने बताया कि खेलों के साथ-साथ एडवेंचर गतिविधियों एवं पर्वतारोहण कार्यक्रम में भी राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त की गई हैं। पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी राज्य के राजकीय विद्यालयों के 44 मेधावी छात्र-छात्राओं को मनाली क्षेत्र में स्थित 5289 मीटर ऊँचाई की 'फ्रेंडशिप पीक' पर पर्वतारोहण अभियान कार्यक्रम के तहत भेजा जा रहा है। स्कूली बच्चों को पर्वतारोहण एक्सपीडीशन में भाग दिलाने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य है। वर्ष 2018-19 के दौरान हरियाणा प्रदेश ने एडवेंचर कार्यक्रमों में भागीदारी के आधार पर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव हासिल किया है। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण प्रतियोगिता में भी राज्य ने राष्ट्रीय स्तर पर परचम लहराकर 'बैस्ट स्टेट-एजुकेशन-डिपार्टमैंट' का खिताब हासिल किया।

# महावीर गुड्डू को 'पंडित लखमीचंद शिक्षा व संस्कृति पुरस्कार'

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कारखाना, जिला जींद के प्रधानाचार्य महावीर सिंह को 'पंडित लखमीचंद शिक्षा व संस्कृति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। कला के क्षेत्र में वे महावीर गुड्डू के नाम से विख्यात हैं।

हरियाणवी संस्कृति का देश-विदेश में डंका बजाने में महावीर गुड्डू का बहुत बड़ा योगदान है। शिक्षा मंत्री महोदय ने अपने वक्तव्य में उनके इस योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

महावीर गुड्डू ने 15 अगस्त, 1972 को पहली बार देशभक्ति से ओतप्रोत दो गीतों की प्रस्तुति से अपनी कलाकारी के जीवन की शुरुआत की। उसके बाद से आज तक वह मंच पर हजारों कार्यक्रम दे चुके हैं। 12 मार्च 1980 में उनका नाटक पनिहारी-80 पूरे देश में प्रथम रहा, इसके अलावा 1985 में हुए यूथ फेस्टिवल में उनका डांस व हरियाणवीं स्किट अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुति के लिए चुनी गई। यही नहीं, उनका फॉक डांस पाँच बार ऑल इंडिया फॉक डांस में प्रथम रहा। देश का ऐसा कोई हिस्सा नहीं जहाँ महावीर गुड्डू ने हरियाणवीं संस्कृति की छटा बिखेरने का काम न किया हो, इसके अलावा उन्होंने अमेरिका में भी हरियाणवीं संस्कृति का डंका बजाया और अमेरिका के न्यूयार्क, न्यूजर्सी व पेंशनमीनिया में अपनी प्रस्तुतियाँ दी। अमेरिका में 'आइकॉन ऑफ हरियाणा' के गौरव से भी अलंकृत किया गया। लंदन में उन्हें 'हरियाणा गौरव' के पुरस्कार से नवाज़ा जा चुका है। हरियाणवीं संस्कृति में आ रही फूहड़ता के बारे में वे चिंतित रहते हैं। उनका मानना है कि फूहड़ता परोसना सच्चे कलाकार का धर्म नहीं है।

उन्होंने विश्वास दिलाया कि उन क्षेत्रों में भी शीघ्र ही हम उत्कृष्टता व श्रेष्ठता हासिल कर लेंगे, जिनमें अभी सुधार की गुंजाइश है और सामूहिक सहयोग से शीघ्र ही हम प्रदेश को शिक्षा के हर क्षेत्र में अव्वल दर्जे पर ले आयेंगे।

शिक्षामंत्री ने राज्यपाल श्री सत्यदेव नारायण आर्य को विभाग की ओर से स्मृति-चिह्न भेंट किया। प्रधान सचिव, डॉ. महावीर सिंह ने शिक्षा-मंत्री महोदय को तथा प्रधान सचिव महोदय को निदेशक मौलिक शिक्षा महेश्वर शर्मा ने स्मृति-चिह्न प्रदान किया।

इस अवसर पर शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. बलकार सिंह ने सभी का धन्यवाद किया। पुरस्कृत अध्यापकों को उन्होंने विशेष रूप से बधाई दी और उनसे यह अपेक्षा की कि वे और अधिक ऊर्जा से काम करते हुए अपने प्रयासों से प्रदेश के शिक्षा जगत में क्रांति लायेंगे।

इस कार्यक्रम में पशुपालन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री सुनील गुलाटी, राज्यपाल के सचिव श्री विजय सिंह दहिया तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग के निदेशक श्री महेश्वर शर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विभाग के जन संपर्क अधिकारी व प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक द्वारा किया गया।

drpardeeprathore@gmail.com

# बापू की 150वीं जयंती को अनूठे अंदाज़ में मनाया

डॉ. प्रदीप राठौर

महात्मा गांधी की जयंती के उपलक्ष्य में प्रदेश भर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों में 15 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़ा मनाया गया। गौरतलब है कि हम इस वर्ष बापू की 150वीं जयंती मना रहे हैं। 2 अक्टूबर के दिन विद्यालयों में 'स्वच्छता ही सेवा' थीम पर व महात्मा गाँधी जी के जीवन मूल्यों पर आधारित भाषण, स्लोगन, पेंटिंग, कवितोच्चारण, नाटक आदि प्रतियोगिताएँ व जन-चेतना रैलियाँ आयोजित की गईं। इसी दिन प्रातः 8 बजे से 11 बजे के बीच विद्यार्थियों ने श्रमसेवा की, जिसके अन्तर्गत विद्यालय परिसर व निकटवर्ती सार्वजनिक क्षेत्रों में विद्यार्थियों ने सेवा-कार्य किए। विद्यार्थियों ने विशेष तौर पर प्लास्टिक कचरे की सफाई करते हुए क्षेत्रवासियों को प्लास्टिक के दुष्परिणामों के प्रति भी आगाह किया। निदेशालय की शैक्षणिक शाखा के सहायक निदेशक नंदकिशोर वर्मा ने 'शिक्षा सारथी' से बातचीत करते हुए बताया कि इस कार्यक्रम का मकसद पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ विद्यार्थियों के मन में श्रम के प्रति सम्मान जगाना भी है।

इस संबंध में विशेष बात यह रही कि स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों (ग्रामीण इलाकों में सरपंच तथा शहरी इलाकों में नगर-निगम, नगर-पालिका, नगर-परिषद) से तालमेल करते हुए समय तथा स्थान का चयन करते हुए किए गए। निदेशालय की ओर से जारी पत्र के अनुसार श्रमसेवा के कार्यक्रमों की रिपोर्ट निदेशालय में भेजना विद्यालयों के लिए अनिवार्य किया गया था।

वैसे तो माननीय प्रधानमंत्री महोदय के आह्वान पर गाँधी जी की 150वीं जयंती पर देशभर में स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम किए गए, लेकिन हरियाणा प्रदेश के विद्यालयों में इस संबंध में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। प्रधानमंत्री महोदय जब 8 सितंबर को रोहतक रैली में पधारे थे, तो उस रैली को उन्होंने 'इको फ्रेंडली' रैली बनाया था। लोगों के हाथों में प्लास्टिक के स्थान पर कपड़े के झंडे थे, रैली में पहुँचे लाखों लोगों की प्यास बुझाने के लिए हज़ारों मिट्टी के मटकों की व्यवस्था की गई थी। इस कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि जब देश के प्रधानमंत्री इस मामले में बेहद चिंतित हैं तो पूरे प्रदेश को भी चिंतित होना चाहिए।

विद्यालयों में जनजागरण कार्यक्रमों का आरंभ तो 11 सितंबर से ही हो गया था। विद्यार्थियों, अभिभावकों व विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के माध्यम से पोलिथीन तथा प्लास्टिक वेस्ट के निपटान के लिए जागरूकता फैलाई गई। जन-सामान्य को इस संबंध में जागरूक किया गया कि वे प्लास्टिक से बनी थैलियों के स्थान पर कपड़े, कागज़ या जूट आदि से बने थैलों का इस्तेमाल करें। 2 अक्टूबर के दिन विद्यार्थी न केवल स्वच्छता संबंधी कार्यक्रमों में संलग्न रहे, बल्कि उन्हें इस कार्यक्रम को मात्र एक दिन में समाप्त न करके अपनी आदत में शामिल करने की प्रेरणा दी गई। विद्यार्थियों को शपथ दिलाई गई-' मैं शपथ लेता हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा और उसके लिए समय दूँगा। हर वर्ष 100 घंटे यानि हर सप्ताह दो घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूँगा। मैं न गंदगी करूँगा न किसी और को करने दूँगा। सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मुहल्ले से, मेरे गाँव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरुआत करूँगा। मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं उसका कारण यह है कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं। इस विचार के साथ मैं गाँव-गाँव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूँगा। मैं आज जो शपथ ले रहा हूँ, वह अन्य 100 व्यक्तियों से भी करवाऊँगा। वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए 100 घंटे दें, इसके लिए प्रयास करूँगा। मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ

बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।'

2 से 27 अक्टूबर तक विद्यालयों में आयोजित स्वच्छता सबंधी कार्यक्रमों की विस्तृत सूची सभी विद्यालयों में भेजी गई थी, ताकि गतिविधियों में एकरूपता रहे। गांधी जयंती के दिन श्रम दान से विद्यार्थियों ने जो प्लास्टिक अवशेष एकत्रित किए, उनका निर्धारित स्थानों पर संग्रहण हुआ। 8 से 10 अक्टूबर तक पुनः उपयोग तथा गैर पुनः उपयोग में अपने वाले कचरे को अलग-अलग किया गया। 11 से 27 अक्टूबर तक पुनः उपयोग निष्पादन के लिए छांटे कचरे को निर्धारित स्थानों पर पहुँचाने का कार्य किया गया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को पॉलिथीन पर प्लास्टिक के दुष्परिणामों व दुष्प्रभावों के बारे में विशेष तौर पर जागरूक किया गया। उन्हें कहा गया कि वे प्लास्टिक के बैग न लाएँ, पानी के लिए प्लास्टिक की बोतल के स्थान पर स्टील की बोतल या छोटे गिलास

लाएँ, खाना भी कपड़े में लपेटकर ही लाएँ। कुरुक्षेत्र जिले के रावमा विद्यालय खरींडवा की प्राचार्या इंदु कौशिक ने बताया कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए लाभकारी साबित हुआ है। उनके विद्यालय में स्वच्छता पखवाड़े के दौरान विद्यार्थियों को लगातार प्लास्टिक के दुष्प्रभावों से अवगत कराया गया। उन्हें बताया गया कि प्लास्टिक पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है। हर वर्ष पूरे विश्व में जितना प्लास्टिक फेंका जाता है उससे पृथ्वी के चार चक्कर बनाए जा सकते हैं।

अंबाला जिले के राजकीय उच्च विद्यालय खैरा के मुख्याध्यापक श्याम सुंदर शर्मा ने बताया कि उनके विद्यालय में हुई स्लोगन प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने स्वच्छता ही सेवा व महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों पर आधारित स्लोगन लिखे- 'जहाँ पवित्रता, वहीं निर्भयता,' 'सब रोगों की एक दवाई, आसपास रखो सफाई',' पर्यावरण को बचाना है, स्वच्छता का संदेश पहुँचाना है'। जिले के सिक्ख गर्ल्स हाई स्कूल अंबाला में छात्राओं ने आइसक्रीम स्टिक्स से एक बड़ा चरखा बनाया। प्रधानाचार्या सुखजिंद्र कौर ने छात्राओं को बताया गया कि स्वाधीनता आंदोलन में गांधी जी ने चरखे को एक अंग्रेजों के खिलाफ एक शस्त्र के रूप में इस्तेमाल किया। चरखा स्वावलंबन का प्रतीक बना। यह सिर्फ सूत कताई या खादी निर्माण तक ही नहीं सिमटा, बल्कि छोटे और घरेलू उद्योगों की ओर लौटने का मार्ग भी दिखाता है।

फरीदाबाद जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सराय ख्वाजा की जूनियर रेडक्रॉस और सैंट जॉन एंबुलैंस ब्रिगेड ने प्राचार्या नीलम कौशिक की अध्यक्षता विद्यालय तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान चलाया। बच्चों को जूट से बने थैले बाँटे गये। बच्चों ने घर-घर जाकर बताया कि सर्वत्र स्वच्छता के लिए प्लास्टिक का इस्तेमाल कम हो। प्राचार्या ने विद्यार्थियों को बताया कि लगातार प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप कर इंसान ने खुद को प्रकृति के सामने ला खड़ा किया है जहाँ प्रकृति उसका विनाश कर सकती है। जंगलों, वनों की कटाई कर असंतुलन पैदा किया जा रहा है।

drpardeeprathore@gmail.com

विचारणीय

# कैसे हों शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्ध?

विद्यालय की अवधारणा में बहुत सारी बातों, विचारों व प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है। अक्सर उन पर शिक्षक समाज में हर अवसर पर बात करने के अवसर भी निकाले जाते रहे हैं। विद्यालय की संरचना को और ठोस रूप देने या यूँ कहा जाए, कि विद्यालय के आदर्श स्वरूप को परिभाषित करने को हर शिक्षक तत्पर भी दिखाई देता है क्योंकि शिक्षक तभी शिक्षक है जब विद्यालय है। नहीं तो शिक्षक का अपना कोई स्वरूप समाज में बनता दिखाई नहीं देता। एक समय था जब शिक्षक का स्वरूप समाज में अलग तरह का था। विद्यालय के भौतिक स्वरूप व संसाधनों का इतना महत्त्व नहीं था जितना जैविक परिस्थितियों का महत्त्व है। शायद इसलिए एक शिक्षक 'गुरु' ज्यादा शिक्षक कम होता था। गुरु परम्परा को आज का आधुनिक शिक्षा ढाँचा नकारता है।

मैंने अधिकांशतः यह देखा है कि जब शिक्षक वर्ग किसी समूह में बैठता है तो अक्सर एक विद्यालय को बेहतर विद्यालय कैसे बनाया जाए या आदर्श विद्यालय कैसे बने? इन प्रश्नों पर चर्चा होती है तो ज्यादातर जो शिक्षक वर्ग के विचार हैं वो विद्यालय के भौतिक स्वरूप, प्रबन्ध विकास पर्यावरण स्वच्छता, अनुशासन, नामांकन, ठहराव तथा विद्यालय के संचालन को लेकर अधिक प्रभावी दिखाई देते हैं। वास्तव में एक विद्यालय कब एक बेहतर विद्यालय है, इसकी मूल अवधारणा पर चर्चा के अवसर बहुत कम होते हैं। क्यों ? आखिर क्यों शिक्षक वर्ग बचता है हर बार इन चर्चाओं से कि विद्यालय में शिक्षक व शिक्षार्थी सम्बन्ध कैसे हों? और मेरे विचार से शायद ये इसलिए है, क्योंकि विद्यालय का भौतिक स्वरूप बहुत सुन्दर बना देना इतना मुश्किल नहीं है, जितना कि शिक्षक व शिक्षार्थी के मानवीय सम्बन्धों को सुन्दर बनाना। क्योंकि इन सम्बन्धों को सुन्दर बनाने में शिक्षक को स्वयं भी छात्र बनना पड़ता है।

यहाँ सुन्दर शब्द से मेरा तात्पर्य है, सम्बन्धों की खूबसूरती। मैंने ऊपर एक बात कही है कि शिक्षक को वह दूरी जो हर विद्यालय में अमूमन दिखाई देती है शिक्षक- शिक्षार्थी के बीच उसको पाटना होता है और तभी शिक्षार्थी यानि बच्चे शिक्षक से जुड़ाव महसूस करते हैं, उसके मन का डर दूर होता है। वे अपने विचारों को खुलकर अभिव्यक्त कर पाते हैं और सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में बेझिझक शामिल होते हैं।

बच्चा जिस परिवार व परिवेश से आता है। उसके लिए नवीन परिस्थितियाँ और माहौल मन में अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न करता है। ऐसे में बच्चे के लिए सीखना व शिक्षक के लिए सिखाना ये बहुत बड़ी चुनौती होती है पर शिक्षक वर्ग ने इस को कभी चुनौती नहीं माना। सीखना-सिखाना को मात्र एक कार्य माना है, जिसे मशीन की भाँति बस करते हुए चलते जाना है। कक्षा में जाकर पाठ्यपुस्तक, चॉक डस्टर उठाना, विषयवस्तु पर बातचीत करने का कार्य करता है। पाठ पढाना, अभ्यास प्रश्न करवाना, गृहकार्य देना, गृहकार्य जाँच करना, निश्चित समयावधि में मूल्यांकन करना एवं अन्तिम लक्ष्य परीक्षा परिणाम तक पहुँचना। इसके अलावा कभी बच्चे से कोई अपेक्षा न तो शिक्षक करता है न शिक्षार्थी को करने देता है। क्योंकि शिक्षक वर्ग का मानना है कि शिक्षक बच्चे में दूरी होना आवश्यक है वरना वह सीखेगा नहीं। क्योंकि दूरी रहेगी तो डर रहेगा और डर रहेगा तो वो शिक्षक की बात मानेगा और सीखेगा भी। और इसी मानसिकता ने हमें शिक्षा के वास्तविक स्वरूप तक जाने ही नहीं दिया। यह हमने

कभी नहीं सोचा कि बालमनोविज्ञान बच्चों के सीखने के बारे में क्या कहते है, यह कभी अध्ययन किया नहीं। हमें उन अनुसंधानों को पढ़ना चाहिए, कैसे शिक्षक व बच्चों के अच्छे सम्बन्ध बच्चों के सीखने में मदद करते हैं।

हम लोग शिक्षक व बच्चे के सम्बन्ध के बारे में क्या सोचते हैं-

शिक्षक बहुत कुछ जानता है बच्चा कुछ नहीं जानता।

शिक्षक बड़ा होता है और बड़ों का सम्मान करना उसका नैतिक कर्त्तव्य है।

शिक्षक व शिक्षार्थी को सीखने-सिखाने के दौरान दूरी रखनी चाहिए।

कुछ नियम हैं जिनका विद्यार्थियों को पालन करना अनिवार्य है।

शिक्षार्थी को सिर्फ और सिर्फ पढ़ाई पर (किताबों) ध्यान देना चाहिए।

अनुशासन छात्र के जीवन को आगे ले जाता है।

ऊपर जो पाँच छह बातें जो मैंने लिखी हैं वो वास्तव में सिखाने में हमारी कितनी मदद करती हैं, इस पर शिक्षक को विचार करना चाहिए। क्योंकि अगर बच्चे को इन नियमों का पालन करना पड़ता है तो ये शिक्षक व शिक्षार्थी के बीच कभी अपनत्व व खूबसूरत सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते। जो दूरी पहले थी,वो आज भी है और आगे भी बनी रहेगी और शिक्षकों के सामने जो चुनौती है वो हमेशा बनी रहेगी और ये सवाल उठते ही रहेंगे कि बच्चे के साथ कितने ही प्रयास कर लिए जाएँ वह नहीं सीख पाता है।

अगर इस सम्बन्ध को लेकर मेरे व्यक्तिगत विचार जाने जाएँ तो मेरा मानना है कि 'शिक्षक-शिक्षार्थियों से वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह स्वयं के लिए चाहता है तो शायद ये सम्बन्ध गहरे होंगे।' जब भी कक्षा-कक्ष में जाएँ मुस्कान साथ लेकर जाएँ। जाते ही उनसे अनौपचारिक बातचीत करें, माहौल को सीखने का बनाना हो तो पहले बच्चों से हँसकर बातचीत करें। उनसे विद्यालय आने व नहीं आने के कारणों को भी जानने का प्रयास करें। शिक्षक का व्यवहार बच्चे को विद्यालय से जोड़ने में काफी मदद करता है। कभी बच्चों के बीच बैठने का अवसर मिले तो उसे न छोड़ें। मैंने कई बार ये अनुभव किया कि बच्चे मेरे बहुत करीब आकर मुझे छू कर बात करना चाहते हैं। कुछ सवाल पूछते हैं। पर मुझे कभी याद नहीं कि मैंने उनको डाँटा या फटकारा हो।

किसी दिन उनका मन पढ़ने में न हो तो पूरा कालांश सिर्फ बातचीत करना, उनके बारे में जानना, उनके अपने बारे में बताना, मुझे बहुत अच्छा लगता है।

अभी हाल ही का मेरे वर्तमान विद्यालय का अनुभव शेयर कर रही हूँ। मैं कक्षा नवीं में सामाजिक विज्ञान पढ़ाती हूँ। तो कक्षा में पहुँचते ही एक दिन मैंने देखा कि बच्चे पर्याप्त संख्या में उपस्थित नहीं थे। मुझे लगा आज पढ़ाने के बजाय इनसे बातचीत की जाए। मैंने कहा कि बताओ आज हमें पढ़ना चाहिए या नहीं ? जैसा कि अपेक्षित था, वैसा ही जवाब मिला, कि पढ़ने का मन नहीं है। मैंने कहा चलो बातें करते हैं। तो सब एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्कुराने लगे, शायद उनको ये आश्चर्य लगा होगा। फिर एक बच्चा बोला-मैडम जी क्या बात करेंगे। तो मैंने कहा जो भी तुम लोग कहो, और मैंने बातचीत शुरू की। लेकिन उससे पहले मैंने कहा- बातचीत करने से पहले एक-दूसरे का जानना जरूरी है। तो पहले तुम सब अपने बारे में बताओ। मैंने उनसे उनके नाम, निवास स्थान व पारिवारिक वातावरण को लेकर कुछ बातचीत की। सब बहुत खुश हुए। जब सब अपने बारे में बता चुके तब मैंने उनसे कहा कि मैंने तुम्हारे बारे में जाना, तुम नहीं जानना चाहोगे मेरे बारे में ? तो वो हल्के से मुस्कुरा दिए। मैंने कहा मेरा नाम नहीं जानना चाहोगे ? तुम लोगों ने तो पूछा भी नहीं कि मैडम आपका नाम क्या है? तो उनका जवाब था मैडम जी हमें डर लगता है। मैंने पूछा क्यों ? डर किस बात का तो उनका कहना था कि हमने एक बार एक मैडम से पूछ लिया था तो उनका जवाब था कि तुम्हें क्या मतलब है मेरे नाम से, काम करो अपना। और एक घण्टे तक उनका लेक्चर सुनने को मिला। पहली बार कोई टीचर ऐसा मिला है जो हमें जानना चाहता है और अपने बारे में बताना चाहता है। सुनकर बड़ा अजीब लगा। और उन बच्चों से न जाने क्यों अपनापन और बढ़ गया। वो मेरी हर बात मानने लगे और पढ़ने के लिए भी सजग होने लगे। आज भी रोजाना एक-दो छात्र दिन में मुझे कॉल करके सवाल पूछते रहते हैं। स्कूल के बारे में सूचना लेते रहते हैं। बहुत अच्छा लगता है, खुशी मिलती है।

एक शिक्षक को बच्चों के साथ संवाद करते रहना चाहिए। सही व गलत के चुनाव का फैसला उनका स्वयं का हो, ऐसा वातावरण तैयार होना चाहिए। शिक्षक सिर्फ विषय वस्तु को बच्चों तक पहुँचाने हेतु साधन मात्र नहीं होना चाहिए। बल्कि उनके जीवन को दिशा देने वाला साध्य होना चाहिए। विद्यालय परिवार से जुड़ी गतिविधियों के बीच एक कड़ी का कार्य शिक्षक का हो। बच्चे को विद्यालय आने पर मजबूर कर दे ऐसा शिक्षक

का व शिक्षार्थी का सम्बन्ध हो। शिक्षित होना और पढ़ना इन दोनों शब्दों के अर्थ की समझ बच्चों में विकसित हो जाए, ऐसी गतिविधियाँ हमारे व्यवहार में शामिल हो जाएँ। आदर्श की बातें करना और आदर्श स्थापित करने की प्रक्रिया को एक शिक्षक को स्वयं में विकसित करना प्रथम अनिवार्यता है।

कक्षा-कक्ष में ठहाकों की गूँज भी हो, गीतों की सरगम भी हो, कहानियों व प्रेरक प्रसंगों को सुनाने व सुनने के अवसर भी हों। दोस्ताना व्यवहार भी हो। अभिव्यक्ति के अवसर भी हों। विषय वस्तु को लेकर चर्चाएँ भी हों, विद्यालय व समाज के प्रति चिन्तन भी हो, राष्ट्र भक्ति की चेतना भी हों। मानवीय गुणों को विकसित करने के अवसर भी हो। आदर्श की कोरी बातें न हों। आदर्श स्थापित भी हो। अनुशासन थोपा न जाए स्वानुशासन के लिए प्रेरणा हो। और ये सब जब ही हो पाएगा जब शिक्षक शिक्षार्थी में जो दूरी है कुछ नियमों से बाँधने वाली उस दूरी को पाट दिया जाए। खुलकर संवाद हो। सही-गलत की समझ के अवसर हों। झिझक न हो खुलकर शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य वार्ता हो, विचारों का आदान प्रदान हो। हर बात पर टोका-टाकी न हो। किसी भी विषय पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलुओं पर बातचीत हो।

जब भौतिक स्वरूप से ज्यादा हमारा ध्यान विद्यालय की मूल अवधारणा पर होगा तो वह एक बेहतर विद्यालय होगा। और ये निर्भर करता है शिक्षक-शिक्षार्थी सम्बन्धों पर। शिक्षक व छात्र, विद्यालय की संकल्पना की प्राथमिक आवश्यकता है। क्योंकि अगर भवन है और अन्य भौतिक संसाधन पूर्ण हैं, तो भी छात्र व शिक्षक के बिना वह विद्यालय नहीं है। यह बात प्रत्येक शिक्षक भी जानता है और समुदाय भी। लेकिन छात्र की व्यक्तिगत रुचियों, आवश्यकताओं, जिज्ञासाओं, विचारों व भावनाओं को समझने का सार्थक प्रयास शिक्षक समुदाय या बाहरी परिवेशीय समुदाय कितना कर पाया है, इसका सटीक उत्तर हम नहीं ढूँढ पाए। बालमन की अपेक्षाएँ शिक्षक से व अभिभावकों से क्या व कितनी हैं, इसको जानने के प्रयास में शायद अभी तक हम असफल से हैं। क्योंकि अभी तक थोपा हुआ ज्ञान ज्यादा व अनुभव से प्राप्त किया गया ज्ञान कम महसूस सा होता है।

बच्चे की रुचि व इच्छाओं को परिवार से ही नकारे जाने की शुरुआत शिक्षा प्राप्त करने के प्रथम पायदान से हो जाती है। अभिभावक कभी बच्चे से यह नहीं जानना चाहता कि वह क्या चाहता है। स्कूल चयन से लेकर भाषा चयन तक की छूट बच्चे को नहीं है। अगर मैं आज के परिवेश की बात करूँ तो ढाई साल का बच्चा जो सिर्फ माँ की गोद, पिता का दुलार व भाई, बहिन व अन्य परिवाजनों का स्नेह चाहता है,उसको शिक्षा ग्रहण करने हेतु बड़े-बड़े चमक-दमक वाले नामी गिरामी विद्यालयों में भेजा जाने लगता है। नए लोग, नया परिवेश, अनजान जगह जहाँ जाकर बच्चे के मन में अगर मासूम सवाल भी उठते हैं तो उनका जवाब देने वाला आसपास कोई नहीं। माँ-बाप के पास सबके जानने गौरवान्वित होने के बहुत अवसर आ जाते हैं कि हमारा बच्चा ऐसे हाई-फाई स्कूल में पढ़ता है। और उस बच्चे को नहीं पता इन सभी बातों के दौरान कब उसका बचपन छीन लिया गया।

अब आगे हम बाते करते हैं कि बच्चे व शिक्षक की, जहाँ शिक्षक सिर्फ बच्चे को सिखाने के लिए तत्पर हैं समझने के लिए नहीं। वो क्या चाहता है, क्या सोचता हैं उसके बालमन में कितने सवाल होंगे? इनसे किसी को सरोकार नहीं वह शिक्षक के व्यक्तित्व को देखकर, उसकी आँखों की तरफ देखकर सहम जाता है। क्योंकि वहाँ उस तरफ मुस्कुराहट नहीं रौब है। हो सकता है सभी शिक्षक मेरी बात से सहमत नहीं हों और अभिभावक भी। लेकिन इस बात से तो सभी सहमत होंगे अगर सच में एक शिक्षक की भूमिका में हैं तो।

ढाई या तीन साल के बच्चे को विद्यालय भेजा जाना अनुचित है पर आज के इस मशीनी दौर में इतना सोचने व किसी की राय जानने व मानने का समय नहीं है। बच्चे का

बचपन विद्यालयों की प्रतिस्पर्धा में कहीं गुम सा हो गया। अब इसके बाद जब बच्चा विद्यालय आने लगा। उसकी पहचान व संज्ञा बदलने लगी। अब वह विद्यार्थी है जिसका काम है विद्या अर्जन करना।

विद्यालय में सबसे पहले तो शिक्षण प्रक्रियाओं के दौरान बच्चे को एक विद्यार्थी के रूप में यह अहसास करवाया जाता है कि वह कुछ नहीं जानता है। एक शिक्षक बच्चे को बहुत कुछ सिखाने में सक्षम है। यहाँ मैं इस बात को नहीं नकार रही कि शिक्षक सिखाता है, बहुत कुछ सिखाता है। लेकिन क्या ये बच्चे के साथ अन्याय नहीं कि वह जो जानता है उसको कभी नए ज्ञान के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए। उसे खुलकर मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर दिए जाने चाहिए। जो भाषा और अनुभव वह साथ लेकर आया है उनको शिक्षण प्रक्रियाओं में जोड़कर सिखाया जाना चाहिए। बच्चे के सवालों का एक शिक्षक के रूप में बहुत सहजता से जवाब दिया जाना चाहिए। नई विचारधारा व शिक्षा में आए नवीन बदलावों में एक नई अवधारणा ही है और वह यह कि शिक्षक कम सहजकर्ता ज्यादा है। बच्चे की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति पर नकारात्मक टिप्पणी भी मानसिक हिंसा में आती है। कई बातें ऐसी भी हो सकती हैं जो बच्चे हमें सिखा सकते हैं तो क्या हमें नहीं सीखना चाहिए। क्या हमें उसके विचारों व भावनाओं को सम्मान नहीं देना चाहिए। बेशक हम उम्र में बड़े हैं लेकिन बच्चे का सम्मान उसकी अभिव्यक्ति को सराहना, ये भी सहजकर्ता को करना चाहिए। तभी बच्चे शिक्षक का अनुकरण कर सीखने की प्रक्रिया में शामिल होंगे।

हम सभी जानते हैं कि बच्चा कैसे सीखता है तो क्यों न उसको अनुकरण के लिए हम स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करें। बच्चे को अनुशासन सिखाने से पहले स्वयं अनुशासन के उदाहरण प्रस्तुत करें। मेरा मानना तो यह है कि अनुशासन के नियमों का पालन थोपा नहीं जाना चाहिए, बल्कि, देखकर स्वयं पालन कर बच्चे स्वानुशासन के लिए प्रेरित हों। ऐसा कुछ हो-जैसे-बच्चे को विद्यालय समय पर आने के लिए कहा जाता है, पंक्तिबद्ध खड़े होने को कहा जाता है। कक्षा में प्रार्थना सभा में व अन्य गतिविधियों के समय चुप रहने को कहा जाता है, विद्यालयी गणवेश पहनकर आने को कहा जाता है। बड़ों से 'जी' कहना, अभिवादन करना सिखाया जाता है। जूते चप्पल लाइन से खोलकर बैठना, पोषाहार खाते समय पंक्तिबद्ध बैठना बातचीत नहीं करना, स्वयं अपने बर्तन धोकर रखना, उस स्थल की सफाई करना, कक्षा-कक्ष में शिक्षक के निर्देशों का पालन करना सिखाया जाता है, पर क्या इन सभी नियमों का पालन शिक्षक करते हैं ? क्या हमने सीखने के अवसर स्वयं के उदाहरणों से दिए। अगर वास्तव में हम ऐसा करते हैं तो हम सही मायने में एक कुशल शिक्षक हैं अन्यथा हमें अभी बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है।

आप सोच रहे होंगे, कि क्या ये सवाल मुझ पर लागू नहीं होते तो मैं आपको बता दूँ, ये सब सवाल स्वयं मेरे लिए भी उतने ही अपेक्षित हैं जितने सब के लिए। क्योंकि हम सब जीवन भर सीखने की प्रक्रिया में रहते हैं। मनुष्य जीवन पर्यन्त सीखता रहता है और जब सीखना बन्द कर देता है वह मृतप्रायः है। बच्चों के साथ अधिक से अधिक संवाद एक रिश्ता कायम करते हैं। बच्चे से आप कभी उसके बारे में उसकी जिज्ञासाओं को जानने का प्रयास कीजिए। वह आपसे एक रिश्ता बना लेगा। उसकी भाषा, उसके परिवेश, परिवार, विचार उसके अनुभवों को सम्मान देकर देखिए, फिर उसे कहना नहीं पड़ेगा कि हमसे अभिवादन करो। वह दूरी खत्म होगी जो सीखने में बाधा पहुँचाती है।

**ममता जाट, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,**
**कोठी नातमाम, टोंक, राजस्थान**
**लेख 'टीचर्स ऑफ इंडिया' से साभार।**

# देश की शान है - हिन्दी

हम सबकी आन है हिन्दी
भारत की पहचान है हिन्दी
मानवता का पाठ है हिन्दी
वेदों का सार है हिन्दी
देश की हुंकार है हिन्दी
गंगा की निश्चल धार है हिन्दी
अभिव्यक्ति का आधार है हिन्दी
संप्रेषण का पारावार है हिन्दी
हिन्दी प्यारी, हिन्दी यारी, हिन्दी लाड़ दुलारी
हिन्दी अमर, हिन्दी अटल, हिन्दी जग की यारी
सब भाषाओं से है ये विरल
इसलिए है देश की धड़कन
हम सबका बचपन है हिन्दी
हर जन की कथा है हिन्दी
असहायों की सहाय है हिन्दी
भावों की मिठास है हिन्दी
जीवन का हर साज है हिन्दी
प्रेमी का निश्छल प्यार है हिन्दी
यौवन का उल्लास है हिन्दी
हर माँ की पुचकार है हिन्दी
कालजयी भाषा है हिन्दी
जीवन की परिभाषा है हिन्दी
इसलिए हिन्दी है देश का बल
जरूरी है हिन्दी का संबल

**डॉ. वन्दना दुबे**
**विषय विशेषज्ञ**
**एससीईआरटी**
**गुरुग्राम, हरियाणा**

## बोलें हम हिन्दी में

पर-भाषा का मोह छोड़ दें
लिखें-पढ़ें हिन्दी में।
अपनी भाषा अपनाने में
बोलो क्या शरमाना,
झोंपड़ियों से भला न होता
राजमहल का बाना,
राजमहल का गर्व तोड़ दें
लिखें-पढ़े हिन्दी में।
जिसने निज पहचान बनाई
वही पुजा दुनिया में,
औरों के पीछे जो भागा
खूब झुका दुनिया में,
टेढ़ी-मेढ़ी राह मोड़ दें
लिखें-पढ़े हिन्दी में।
भारतीय संस्कृति की बेलें
सुंदर सबसे ज्यादा,
हम भी गर्व करें अपने पर
कर लें नेक इरादा,
नकलीपन का घड़ा फोड़ दें
लिखें-पढ़े हिन्दी में।
हम हिन्दी, हिन्दोस्तान है
प्राणों से भी प्यारा,
हिन्दी के प्रति रहे समर्पित
देश हमारा सारा,
बाधाओं के पर मरोड़ दें
लिखें-पढ़ें हिन्दी में।

**डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल**
**सेवानिवृत्त अध्यापक**
**शिक्षा विभाग, हरियाणा।**
**785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम**

# मल्लाह की वादियों में एडवेंचर कैम्प

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

हरे-भरे घने जंगलों, दिव्य नजरों तथा पहाड़ों के आँचल में बसे गाँव मल्लाह (पंचकूला) में शिक्षा विभाग पंचकूला की ओर से सरकारी विद्यालयों की 9वीं से 12वीं तक की छात्राओं के लिए लगे एडवेंचर एवं ट्रैकिंग कैम्प के लिए मैं रवाना हुआ। गर्मी अधिक थी। हिसार से मैं करीब दो बजे पंचकूला बस अड्डे पर पहुँच गया तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला में कार्यरत कार्यक्रम अधिकारी एवं एडवेंचर कम्पों के इंचार्ज रामकुमार जी को फोन कर दिया। वे दस मिनट में करनाल के डीओसी सियाराम के साथ गाड़ी लेकर मुझे लेने बस अड्डे पर आ गए। हम तीनों पंचकूला से पिंजौर के पास मल्लाह मोड़ होते हुए मल्लाह एडवेंचर कैम्प की ओर चले। मल्लाह मोड़ से ही ये सफर रुचिकर बनता जाता है। यहाँ से दायें मुड़कर कौशल्या बाँध के सामने से घघर नदी के पुल को पार करते हुए

सीआरपीएफ के से गुजरते हुए आगे बढ़े तो जंगल शुरू हुआ। इस संकरी सी पक्की सड़क से गुजरते हुए ऐसा लगता है जैसे हम दूसरी दुनिया में प्रवेश कर गए। सड़क के दोनों तरफ वन्य जीव अभ्यारण था। रामकुमार ने बताया कि इस जंगल में बड़ी संख्या में हिरण, चीहल, बारहसींगे, नीलगाय, जंगली जानवर हैं। कभी-कभी यहाँ टाइगर भी देखा गया है। जंगल सतपुडा के जंगलों की तरह छोटी-बड़ी झाड़ियों, उलझी हुई बेलों, तरह-तरह के पेड़ों, बरसाती नदी, सूखे नालों वाला है तथा हरियाणा वन विभाग की देखरेख में है।

हम थोड़ा आगे बढ़े तो चीतल सड़क के किनारे झाड़ियाँ खाने में व्यस्त थे। कभी-कभी यहाँ 20-20 या उससे भी अधिक की टोलियों में हिरण, चीतल या बारहसिंगे मिल जाते हैं। ये जानवर यहाँ सदियों से रहते आए हैं। ये अलग बात है कि आबादी बढ़ने व अवैध शिकार करने से इनकी कुछ संख्या घटी है। मैंने गाड़ी से उतर कर उनके दो-तीन फोटो लिए फिर आगे चल दिये। वन विभाग के कर्मचारी इस जंगल में अनेक जगह बने छोटे-बडे गड्ढों में वन्य प्राणियों के लिए पानी डालते रहते हैं ताकि वे प्यास से न मरें, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के कारण नदियों में पानी कम हो गया या अधिकतर सूख गई। इस जंगल में हजारों जंगली पशु हैं जबकि पानी का अभाव है। अधिक बारिश होने पर ही यहाँ की नदियों या नालों में पानी-आता है। हम जंगल से गुजरते हुए मात्र 10-11 किलोमीटर की जंगल की दूरी तय करते हुए कैम्प स्थल पर पहुँच गए। करीब एक माह से चले आ रहे कैम्प में आज आखिरी ग्रुप आना था जिसमें पंचकूला, करनाल, महेन्द्रगढ़ व पलवल के करीब 200 छात्राएँ व शिक्षिकाएँ आनी थीं। तभी पता चला कि सभी बच्चे आ चुके हैं। बच्चों ने सबसे पहले खाना खाया, आराम किया तथा उन्हें रहने के लिए स्कूल कमरे बाँट दिये।

एक घंटे बाद कार्यक्रम अधिकारी व कैम्प आयोजक रामकुमार से रू-ब-रू हुए। उन्होंने बच्चों को छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ सुनाईं। अनेक तरह के उदाहरणों से जीने का तरीका सिखाया। जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्त्व बताया। जल, जंगल, पर्यावरण सरंक्षण का सन्देश दिया तथा प्रकृति का सम्मान करना सिखाया। उन्होंने इस तरह के एडवेंचर कैम्पों के आयोजन में सहयोग के लिए शिक्षा अधिकारियों, उच्चाधिकारियों का धन्यवाद किया। उन माता-पिताओं, शिक्षिकाओं व प्राचार्यों का भी धन्यवाद किया जो बच्चों को इन कैम्पों में बहुत कुछ सीखने के लिए भेजते हैं। रामकुमार ने कहा कि आज प्रतियोगिता के जमाने में पढ़ाई अति आवश्यक है, किन्तु जो बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलों, इस तरह के बहुपयोगी एडवेंचर कैम्पों में भाग लेते हैं वे बच्चे जीवन में अधिक सफल होते हैं। क्योंकि ये कैम्प जीने का तरीका सिखाते हैं। बच्चों को मन व तन दोनों तरह से मजबूत बनाते हैं। बच्चों में इतना आत्म विश्वास जागृत होता है कि वे हर तरह की कठिनाई का सामना कर सकें।

कुछ देर बाद बच्चों को ट्रैकिंग के लिए हर्बल पार्क ले जाया गया ताकि छात्राओं को जड़ी-बूटियों व तरह-तरह के पौधों का ज्ञान हो सके। गाँव से होते हुए खेतों से गुजरते हुए करीब आधे घंटे में सभी हर्बल पार्क पहुँच गए। यहाँ तरह तरह के पौधे हैं तथा प्रत्येक पौधे व पेड़ों के साथ उनके नाम की पट्टी लगी है। रामकुमार व सियाराम ने पौधों की जानकारी दी तथा सभी बच्चों को अपनी-अपनी कॉपियों पर पेड़-पौधों के नाम लिखने को कहा गया। फिर सभी अपने अपने कार्य में जुट गए। इस वाटिका या पार्क में चन्दन, घास, रुद्राक्ष, छोटी-बड़ी इलाइची, नीम, गोंद-कतीरा, लाल कचनार, हेड्रू, हरड, पिलखन, अंजीर, पीपल, दमा बूटी, बन व्याज, नरगिस, अकरकरा, सतावसी, उचंटी, चाँदनी, गुडहल, अशोका, बेल पत्र, फिसवेल पाम, रीठा, आँवला, सिममबल, खिरनी शयान, खैर, ढाक, राजहरड, कपूर, अमलताश, खिरनी, तेज पत्ता, वन तुलसी, दिन का राजा , रात की रानी, खजूर, हरसिंगार आदि के पेड़-पौधे लगे हुए हैं। बच्चों ने पेड़ से झड़े, धरती पर पड़े कुछ रुद्राक्ष भी चुने।

गाँव के पूर्व सरपंच नरेन्द्र राणा ने बताया कि पक्षियों ने हर्बल पार्क से चन्दन सहित कई पेड़ों के बीच पूरे जंगल में बिखरा दिये जिससे पिछले कुछ वर्षों में इस जंगल में सैकड़ों चन्दन के पेड़ उग आए हैं। अन्य उपयोगी पेड़ भी देखने को मिल जाते हैं। यहीं से रामकुमार व सियाराम ने मुझे कैम्प सँभालने के लिए कहा तथा आप मनाली के लिए रवाना हो गए। वहाँ भी कैम्प चल रहे थे। कुछ देर बाद सूर्यास्त के साथ ही हम सभी कैम्प स्थल की ओर चल दिये। थोड़ी दूर आगे चले तो सड़क पर अपने इन्द्रधनुषी पंख फैलाकर नाचते हुए मोर देखकर बड़े बहुत खुश हुए। कुछ फोटो लेने लगे। इतने में वह अपनी रंगीन पंखों का खजाना समेटकर जंगल की ओर चला गया। एक मोर हमारे ऊपर से उड़ा तो कौतूहल का

विषय बना। मुझे बड़ा अच्छा लगा जब मुझे जंगल से एक नहीं, बल्कि अनेक मोरों की आवाजें सुनाई दीं। शायद ये सोने से पहले अपने सभी साथियों को सचेत करने, बुलाने, अपनी बात उन तक पहुँचाने या अपनी मौजूदगी का एहसास कराने के लिए नियमित तरीका था। गाँव के एक व्यक्ति ने बताया कि इस जंगल में हजारों की संख्या में मोर हैं। और खुशी की बात है कि गाँव वाले मोर को नहीं मारते। उनकी मान्यता है कि मोर मारने से आदमी को कोढ़ लग जाता है। दूसरा हमारा राष्ट्रीय पक्षी भी है और यही मान्यता व सोच मोरों को बनाए हुए है। फिर यहाँ जंगल अधिक है खेती कम। खेतों में यहाँ के लोग रसायन खाद की बजाय गोबर की खाद का उपयोग करते हैं जिससे यहाँ के पक्षी बचे हुए हैं किन्तु दूसरी तरफ दुखद घटना ये ही यहाँ के लोग जंगली पशुओं का शिकार करते हैं। जब जंगली पशु हिरण, चीतल, बारहसिंगा के झुण्ड पानी पीने नदी या झील पर आते है तो गोली मार कर शिकार कर लेते हैं। उन्होंने बताया कि हिमाचल के नजदीकी गाँवों से भी कुछ लोग शिकार करने यहाँ आते हैं। हालांकि सड़कों पर जंगल में जगह जगह साइन बोर्ड लगे हैं -'शिकार करना अपराध है' पर वन कर्मचारी कम होने पर हर जगह जा नहीं पाते।

कुछ देर बाद हम कैम्प स्थल स्कूल में पहुँच गए। स्कूल घग्घर नदी के किनारे पर बना हुआ है। किन्तु इस नदी में पानी केवल बरसात के दिनों में रहता है। दूसरी तरफ घग्घर की दूसरी शाखा है जिसमें वर्षभर पानी चलता रहता है। कैम्प साइड एक सुन्दर जगह है। यहाँ से तीन ओर ऊँचे पहाड़ हैं तो एक तरफ जंगल। ये पहाड़ हरियाणा की धरती पर हैं तथा उनके पीछे अधिक ऊँचे पहाड़ हिमाचल के हैं। गाँव के पूर्व सरपंच नरेन्द्र राणा तथा शिक्षक दीपक गुप्ता लवली ने बताया कि सामने डखरोग पहाड़ की चोटी है जो हरियाणा के सभी पहाड़ों में सबसे ऊँची चोटी है। उन्होंने बताया कि किताबों में मोरनी हिल्स की चोटी को सबसे ऊँची बताया है, किन्तु चण्डीगढ़ एयर पोर्ट के इन्जिनियरों ने हमें बताया कि उनके यन्त्रों के हिसाब से मोरनी की नहीं, बल्कि डखरोग पहाड़ी की चोटी सबसे ऊँची है।

अब बच्चों ने थोड़ा आराम किया, फिर खाना खाया तथा बाद में उनके लिए अपराजिता फाउण्डेशन ने शिक्षा विभाग की ओर से 'टिम-टिम तारे' लाइफ स्किल कार्यक्रम शुरू किया गया ताकि जीवन की हर मुश्किल को आसान कर सकें। उसके बाद छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। ये कार्यक्रम छात्राओं में नया जोश, नई ऊर्जा भरने उनकी थकान उतारने तथा प्रतिभा निखार के लिए उपयोगी साबित होते हैं। बारी-बारी यहाँ आए प्रत्येक जिले की छात्राओं की सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी गईं।

अगले दिन सुबह उठकर उन्हें स्वस्थ रखने के लिए योग करवाया गया। नाश्ते के बाद हरियाणा के आखरी गाँव धामसू की ट्रैकिंग करवाई गई। नदी, नालों को पार करते हुए, सड़क व जंगल से गुजरते हुए ये ट्रैकिंग करवाई गई। वहाँ से आकर बच्चों को दोपहर का नाश्ता करवाकर एडवेंचर गतिविधियाँ करवाई गईं। इन गतिविधियों में जहाँ बच्चों का मनोरजंन होता है वहीं शारीरिक तौर पर मजबूती भी बनती है।

आम व जामुन के भारी भरकम पेड़ों पर तथा पास की पहाड़ी पर जाती एडवेंचर गतिविधियों में बच्चों का मन लगता है। शाम होते ही फिर खाना तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम रोजाना चलते रहे जो हरियाणवी संस्कृति को बढ़ावा देते हैं।

अगले दिन बच्चे योग करने लग गए तो मेरा ध्यान चहचाते पक्षियों ने खींचा। मैं कैमरा उठाकर लाया तथा मौके का फायदा उठाकर पक्षियों का छायांकन करने लगा। मुझे यहाँ तरह-तरह के रंगीन, छोटे-बड़े पक्षी मिले जिसमें बटेर, तीतर, मोर, जगंली मुर्गे, गुरसल, मैना, बुलबुल, गौरेया, कौए, कोयल, उल्लू, फूल का रस चूसने वाली चिड़िया, काली छोटी व बड़ी चिड़िया, छोटे आकार के बाज, बड़े बाज, चील, नील काठ, पपीहा, बगुला, कौआ, कबूता आदि सैकड़ों तरह के यहाँ पक्षी मिल जाते हैं। कुछ ऐसे पक्षी हैं जो हरियाणा के अन्य स्थलों पर बहुत ही कम पाए जाते हैं। सुबह व शाम के समय अधिक पक्षी दिखते हैं। मुझे बेहद अच्छा लगा कि इन इलाकों में पक्षियों की भरमार है। इन जंगलों, गाँवों के पशु-पक्षियों का दृश्य छायांकन के सुनहरे अवसर प्रदान करता है। मोरों पर शोध करने वालों के लिए भी ये इलाका बेहतरीन अवसर प्रदान करता है। मोरों के यहाँ 25-25, 30-30 के झुंड इकट्ठे भी मिल जाते हैं तो गौरेया के झुंड भी दिखाई दे जाते हैं। आज हमने यहाँ से करीब साढ़े तीन किलोमीटर दूर पहाड़ी पर स्थित टिब्बे वाली माता मन्दिर की ट्रैकिंग पर जाना था। नाश्ता करवाकर सभी शिक्षक व छात्राएँ जंगल के रास्ते से चल पड़े, क्योंकि उनको पहाड़ों के बीच स्थित वन विभाग द्वारा निर्मित बाँध भी दिखाना था। हम सभी 15 मिनट के घने जंगल से गुजरते हुए डैम पर पहुँचे। डैम का रुका पानी एक सुन्दर झील का रूप ले रहा था। तीन ओर ऊँचे पहाड़, झील में झिलमिल करती उनकी परछाई लुभा रही थी। एक गाँववासी ने बताया कि यहाँ दिन में व रात को जंगली जानवर पानी पीने आते हैं। कभी-कभार वे कई बार शिकारियों के शिकार भी हो जाते है। बच्चों ने झील व पहाड़ों के साथ सैल्फी ली। हमने

सभी का ग्रुप फोटो किया फिर सूखी नदी के रास्ते से चले मंजिल की ओर। रास्ते में कई कुएँ भी देखे जिनमें पानी भी था, कभी ये कुएँ दैनिक उपयोगी थे, आज इनकी उपयोगिता उपेक्षा के कारण कम हो गई, भू-विशेषज्ञ बताते हैं कि इस सूखी नदी के नीचे वर्षभर पानी की धारा चलती रहती है। ये यहाँ कई बार हुई खुदाई से साबित हो गया। इन कुओं में इसकी धारा से पानी आता है। ये धारा शायद आगे नदी में मिल जाती है। आधे घंटे के सफर के बाद पहाड़ों की चढ़ाई शुरू हो गई। तीसरी पहाड़ी पर चढ़ने पर माता का मंदिर आया। इन पहाड़ों से एक तरफ तो ऊँचे पहाड़ व घाटियाँ दिखाई देती हैं, दूसरी ओर घग्घर नदी की दूसरी शाखा जिसमें वर्षभर पानी चलता है तथा एक गाँव तथा छोटी-छोटी कुछ बस्तियाँ व खेतों के सुन्दर मंजर दिखाई देते हैं। हिमाचल की खूबसूरत वादियों की तरह ये दृश्य लग रहे थे। यहाँ से सूर्यास्त का दृश्य अद्भुत होता है।

बच्चों व शिक्षकों ने मन्दिर में माथा टेका। पंडित जी ने प्रसाद के रूप में सभी को ठंडा पिलाया तथा पहाड़ी वाली माता की कहानी सुनाई। अगले दिन दूसरी झील की ट्रैकिंग थी। नाश्ता करके एक पहाड़ी की चढ़ाई चढ़ते हुए आगे बढ़े। रास्ते में एक करीब 20 वर्षों से बंद सीमेन्ट की फैक्ट्री मिली। ये फैक्ट्री मालिक के खिलाफ मजदूरों के आन्दोलन की भेंट चढ़ कर बन्द हो गई। करोड़ों का सामान यहाँ जंग खा रहा है। यहाँ के पहाड़ों के पत्थरों से सीमेन्ट अच्छी बनती थी इसलिए ये दूर तक प्रसिद्ध थी।

हम आगे बढ़ रहे थे तो फैक्ट्री की एक छत पर खड़े एक मजदूर से जानकारी लेने लगे। फिर हम जंगल के जानवरों के बारे में पूछने लगे तो उन्होंने बताया कि यहाँ तेंदुए भी हैं। परसों रात को ही हम छत पर बैठे थे। रात करीब नौ बजे हमने इस मार्ग से एक तेंदुआ आता दिखाई दिया। हम डर गए। नीचे हमारा कुत्ता बैठा था। उसने भौंकना शुरू किया ही था कि अचानक दौड़ कर उसने कुत्ते को दबोच लिया तथा जंगल में घुस गया। उन्होंने बताया कि हमनें कई बार तेंदुए को देखा है किन्तु ये अच्छी बात है कि ये तेंदुए किसी मनुष्य पर हमला नहीं करते, उनसे डरते हैं।

हम बिना किसी डर के मस्ती में आगे बढ़ते गए। कुछ देर बार हमें एक सुन्दर झील नजर आई। इस झील में बरसात का पानी-संचय होता है तथा खेती व अन्य उपयोग के काम आता है।

बच्चों ने यहाँ फोटो लिए, सैल्फी ली तथा आधा घंटा रुककर वापिस कैम्प की ओर। यहाँ ऊपर से गाँव मल्लाह, खेत, जगंल व पहाड़ों का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। वापिस आने पर बच्चों की एडवेंचर गतिविधियाँ फिर से शुरू हो गईं। शाम को मनोरजंक, उत्साहवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम। इसी दिन दोपहर बाद बच्चों को कला से जोडने के लिए रंगोली बनाओ, मेहंदी रचाओ व पेंटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

शाम को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन करना था। सम्मान समारोह में सभी छात्राओं को प्रमाण-पत्र बाँटे गए तथा पेंटिंग, रँगोली, मेहंदी, नृत्य, यात्रा वृतान्त प्रतियोगिताओं के विजेता बच्चों को शील्ड बाँटी गई। इसमें मेरा सहयोग ट्रेनर प्रेम सिह ने दिया। 1 जून से 30 जून तक लगने वाले इन एडवेंचर कैम्पों में हरियाणा भर से कुल 1200 छात्राओं ने भाग लिया। प्रत्येक जिले से एक बेस्ट कैंपर अवार्ड भी दिये गए। अगले दिन सुबह रविवार (30 जून) को विदाई होनी थी। आज सुबह भी को जल्द नाश्ता व भोजन दिया गया तथा सभी को मधुर यादों के साथ विदाई दी गई। जाते समय कुछ बच्चों की आँखें नम हो गईं। ये किसी भी कैंप की सफलता की निशानी होती है तथा छात्राओं के आपसी सद्व्यवहार व आपसी लगाव का प्रभाव जो उम्रभर याद रहता है। यही इन एडवेंचर कैम्पों का लक्ष्य भी है कि बच्चे आपस में एक दूसरे से जुड़ें व सामाजिक बनें।

**कला अध्यापक**
**राकवमा विद्यालय एमपी रोही**
**जिला- फतेहाबाद**

# खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

खेल-खेल में विज्ञान शृंखला में विद्यार्थियों को करवायी जा सकने वाली कुछ विज्ञान पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। इन गतिविधियों को करने से विद्यार्थी विज्ञान नियम सिद्धांतों संबंधित उपजी विभिन्न जटिलताओं का सरलीकरण कर सकेगा और उसको लाभ होगा।

### 1. गुब्बारे व पेपर कप में पानी गर्म करना-

क्या हम गुब्बारे में पानी गर्म कर सकते हैं? यह सुनते ही बच्चे अचंभित हुए और एकदम बोले -न, नहीं कर सकते। एक गुब्बारा लिया गया, उसको फुलाकर मोमबत्ती के ऊपर रखा तो वह ठा की आवाज़ के साथ फट गया। अब फिर एक अन्य गुब्बारे में थोड़ा-सा पानी भरकर और उसे फुलाकर मोमबत्ती के ऊपर रखा गया तो गुब्बारा नहीं फटा। विद्यार्थी अचंभित थे। वह पूछ रहे थे ऐसा कैसे हुआ? तब उन्हें बताया गया कि गुब्बारे के अंदर पानी मोमबत्ती की ज्वाला की ऊष्मा अवशोषित कर लेता है, जिस कारण गुब्बारे के मेटेरियल का ज्वलन ताप नहीं आने पाता और वह नहीं फटता। बच्चों ने अपने हाथ से इस गतिविधि को करके देखा और वह बहुत प्रसन्न हुए। इसी प्रकार उन्हें पेपर कप में भी पानी गर्म करके दिखाया गया जिस में उँगली डालकर उन्होंने महसूस किया कि पानी काफी गर्म हो गया है। वह पूछ रहे थे- क्या हम पेपर कप में चाय बना सकते हैं? मैंने कहा- हाँ, जरूर बना सकते हैं।

### 2. मिट्टी का ढेला पानी मे डालना।

कक्षा-6 का पाठ पदार्थों का पृथक्करण चल रहा

था। काँच के एक बर्तन में पानी लेकर उसमें एक सूखी मिट्टी का एक ढेला डाला गया, जो पास ही क्यारी में से उठाया गया था। ढेला पानी में डालते ही वायु के बुलबुले निकले जिससे बच्चों को पता लगा कि मिट्टी में वायु फँसी होती है, जो पानी के अंदर चले जाने के कारण हवा के बुलबुलों के रूप में बाहर आती है। उसके पश्चात उस मिट्टी के ढेले को पानी में मिला दिया गया। बर्तन को कुछ देर के लिए रख दिया गया। आधे घंटे के बाद देखा कि डाली गई मिट्टी का बहुत बड़ा हिस्सा नीचे बैठ गया है। पानी अभी कुछ मटमैला है। पानी के ऊपर छोटे-छोटे काले कण तैर रहे हैं जो मिट्टी में मिले हुए ह्यूमस जीवांश कण थे। बच्चों ने किताब की गतिविधि के साथ इसका मिलान किया। इसे दो घंटे को रखने के बाद देखा कि मिट्टी की अधिकतम मात्रा नीचे बैठ चुकी थी। जिससे बच्चों को अवसादन विधि समझ में आयी और उसके बाद बच्चों को इसी घोल से निथारना विधि को करके दिखाया

गया।

### 3. पेन्सिल को उँगली पर खड़ा करना।

कक्षा-7 का विद्यार्थी सनिश कुमार एक गतिविधि बनाकर लाया, जिसमें उसने एक पेंसिल, एक नट, एक वारशर और लोहे की तार का प्रयोग किया। सबसे पहले वह खाली पेंसिल को अपनी उंगली पर संतुलित करना चाहता है, परंतु वह संतुलित नहीं होती थी व नीचे गिर जाती है। उसके पश्चात उसने वारशर, तार व नट से बने हुए लूप को पेंसिल के साथ कस दिया। अब वह इस सेटअप को पेंसिल की नोक से अपनी उँगली पर उठा सकता था व संतुलित कर सकता था। बच्चे इस गतिविधि को देखकर प्रसन्न हुए और उन्हें गुरुत्व केंद्र के बारे में बताया गया तथा यह भी बताया गया कि वस्तुएँ किस प्रकार संतुलित होती हैं और हम किस प्रकार पैदल चलते हैं और जब हम गिरते हैं तो क्या होता है। बच्चे गुरुत्व

केंद्र के बारे में जानकर बहुत प्रसन्न हुए।

### 4. माचिस से सिक्का निकालो।

जड़त्व को समझाने के लिए विद्यार्थियों को एक नवाचारी गतिविधि करने सिखायी गयी, जिसमें एक माचिस की दीवार व उसकी दराज के बीच पिछले हिस्से में एक रुपए का एक सिक्का फँसाकर अंदर की तरफ कर दिया। अब बच्चों से कहा गया कि इस सिक्के को माचिस की दराज खोले बिना बाहर निकालना है। बच्चे माचिस को उलट-पुलट कर देखने लगे, परंतु वह नहीं निकाल पाये। तब उन्हें बताया गया कि हमें इसको बाहर निकालने के लिए जड़त्व के नियम का इस्तेमाल करेंगे। माचिस के एक सिरे को एक हाथ की उँगलियों के बीच

में कर दूसरे हाथ की उंगली से माचिस के कोने पर चोट की गई। ऐसा करने पर बल माचिस पर लगाया गया जिससे सिक्के पर कोई सीधा बल आरोपित नहीं हुआ। माचिस चोट लगने पर नीचे की तरफ जाती थी, जिससे सिक्का हर बार ऊपर उठ जाता था। अंततः सिक्का निकल कर बाहर गिर गया। बच्चे विज्ञान के इस खेल से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने बार-बार इस गतिविधि को करके देखा और प्रसन्न हुए।

### 5. लिटमस टेस्ट व हल्दी को सूचक रूप में प्रयोग करके अम्ल व क्षार के गुणों को जाना।

अम्ल क्षार व लवण पाठ में में अम्ल क्षार में पहचान कराने के लिए लिटमस टेस्ट बहुत महत्त्व रखता है। कभी हम बचपन में गुलाब की लाल पत्तियों को सफेद कागज की पट्टियों (स्ट्रिप्स) पर रगड़-रगड़ कर लाल लिटमस पेपर बनाया करते थे जो क्षारीय विलियन में डुबोने पर नीला हो जाता था। उस नीले हुए कागज को सुखाकर नीले लिटमस की तरह प्रयोग किया करते थे। लेकिन अब दी गई विज्ञान किट में से लाल और नीला लिटमस पेपर लेकर उससे अम्ल व क्षार का अंतर ज्ञात करने के लिए प्रयोग किया गया। बच्चों ने लिटमस रूपी कागज की स्ट्रिप का रंग बदलता देख लिटमस टेस्ट को जाना। बच्चों ने दो चम्मच हल्दी को पानी में घोलकर उसमें एक सूती रूमाल को डुबोया और देखा कि रुमाल पर हल्दी का पीला रंग चढ़ गया फिर उसे सुखा लिया। सुखाने के पश्चात थोड़े से साबुन को पानी में घोलकर एक कलम नुमा पतली डंडी, लकड़ी के टुकड़े से हल्दी के कागज और कपड़े पर विभिन्न प्रकार के डिजाइन बनाये व मेरा नाम भी लिखा। बच्चों ने इस गतिविधि को करके यह जाना कि हल्दी, क्षारीय विलियन के साथ लाल रंग देता है। अब उन्हें समझ में आ रहा था कि जब खाना खाते वक्त समय सब्जी गिर जाती है और उस कपड़े को जब धोते हैं तो वहाँ पर एक लाल धब्बा बन जाता है जो कई बार धुलाई पर भी नहीं जाता। बच्चे समझ गए कि हल्दी ही इसका कारण है।

इस प्रकार बच्चों को हर पाठ के साथ ही पाठ की विभिन्न प्रकार की विज्ञान गतिविधियाँ करवाने से बच्चे जल्दी सीखते हैं और सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि बच्चे विज्ञान को एक नीरस विषय न मानकर अब विज्ञान में अपनी रुचि प्रकट करते हैं । अध्यापक साथियो! अगले अंक में और रोचक विज्ञान गतिविधियों के साथ मिलते हैं।

**विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक**
**राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप**
**खंड-जगाधरी, जिला यमुनानगर**

# किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम : एक महत्त्वपूर्ण पहल

डॉ वंदना दूबे

किशोरों को मादक पदार्थों के दुरुपयोग के आकर्षण से बचने हेतु सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त, सही और समय पर प्राप्त जानकारी तथा कौशल की आवश्यकता है। राष्ट्रीय समाज रक्षा संस्थान एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के सौजन्य से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण गुरुग्राम के जनसंख्या अनुभाग के द्वारा 'मादक पदार्थों की रोकथाम पर राज्य के सभी डाइट के माध्यम से विद्यालयों में चलाया जा रहा है, क्योंकि किशोर मादक पदार्थों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। मादक पदार्थ किशोरों की मानसिक अवस्था को परिवर्तित कर सकते हैं और उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। मादक पदार्थों का गैर-चिकित्सीय उपयोग जो व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य में परिवर्तन लाता है और स्वास्थ्य के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। मादक पदार्थों का दुरुपयोग कहलाता है। अपनी पहचान स्थापित करने के प्रयास में किशोर नई चीजों को प्रयोग में लाना पसन्द करते हैं। वे मीडिया, सहपाठियों तथा अन्य बाहरी प्रभावों के अधीन होते हैं और अविवेकपूर्ण निर्णय ले सकते हैं जो उन्हें हानि पहुँचा सकते हैं। यह उन्हें मादक पदार्थों के दुरुपयोग के प्रति और अधिक असुरक्षित बना देता है। विशेष रूप से जब उनके पास किसी मादक पदार्थ पर अत्यधिक निर्भरता के दुष्परिणामों को सामना करने के लिए पर्याप्त सहायता तंत्र और जीवनकौशल नहीं होते और इस प्रकार वे मादक पदार्थों के आदी हो जाते हैं।

मादक पदार्थों के दुरुपयोग के आकर्षण से बचने के लिए किशोरों को जागरूक करना अति आवश्यक है। अगर किसी विद्यार्थी को इसकी लत लग जाती है तो उसका जीवन नरक बन जाता है। धीरे-धीरे उसकी मानसिक क्षमता कम होना शुरू हो जाती है और एक दिन ऐसी स्थिति में उसे अपना जीवन अंधकारमय लगना शुरू हो जाता है। तब किशोर के लिए सकारात्मक परिवेश एवं वार्तालाप बहुत जरूरी होता है।

इस कार्यशाला का उद्देश्य यही है कि किशोर इस लत से बचने के लिए इसके दुष्परिणामों से भलीभाँति परिचित हो सकें। इस कार्यक्रम के माध्यम से किशोर मादक पदार्थों के दुरुपयोग से जुड़े मिथकों और भ्रांतियों को जानेंगे और एक समझ विकसित करेंगे कि जिनको नशे की आदत पड़ गई है उनकी देखभाल कैसे करें

तथा उनकी कैसे मदद करें। विद्यार्थियों के लिए आवश्यक कौशल विकसित करना चाहिए जो उन्हें मादक पदार्थों के दुरुपयोग और नशे की आदत से स्वयं को बचाने के लिए विवेकपूर्ण विकल्प बन सके।

विद्यालयों में उसके प्रकार के क्रियाकलाप के माध्यम से बच्चों को जागरूक किया जा सकता है। कि वे मादक पदार्थों से दूर रहें जैसे -

विद्यार्थियों को यह समझने के लिए कि वे मादक द्रव्य और मादक पदार्थों से क्या समझते हैं- कहकर विचार मंथन करें।

उन्हें पूछे कि वे मादक पदार्थों के उपयोग और मादक पदार्थों के दुरुपयोग से क्या समझते हैं?

विद्यार्थियों से कहे कि वे मादक पदार्थों की सूची बनाएँ जिन्हें उनके जैसे किशोर समान्यतः नशे के लिए काम में लाते है।

विद्यार्थियों से पूछें कि मादक पदार्थों का उपयोग करने के लाभों और हानियों के बारे में वे क्या समझते हैं।

लघुनाटिका, कहानी, केस अध्यपन के माध्यम से अनेक गतिविधियों के द्वारा उन्हें इस बुराई से दूर रखा जा सकता है।

वार्तालाप के माध्यम से मादक पदार्थों के दुरुपयोग से सम्बन्धित सामान्य मिथकों और भ्रांतियों को स्पष्ट करना चाहिए।

नशे के कारणों, परिणामों मिथकों और भ्रांतियों पर चर्चा करने के बाद मदद के ढाँचों को समझना महत्त्वपूर्ण है जिन्हें रोकथाम और उपचार दोनों के लिए प्राप्त किया जा सकता है।

किशोरों के जीवन में शिक्षक भी सबसे प्रभावशाली लोगों में होते हैं। शिक्षकों को विद्यार्थियों से शैक्षिक और व्यक्तिगत समस्याओं को साझा करने के प्रयास करने चाहियें और उन्हें अपनी समस्याओं का समाधान करने हेतु मार्गदर्शन देना चाहिए।

**विषय विशेषज्ञ**
**एससीईआरटी हरियाणा,**
**गुरुग्राम**

# चित्रभाषा

चित्रभाषा : एक असीम शक्ति
जो स्थान, घटना, प्रकृति, व्यक्ति जीव को
स्थिर करने की सामर्थ्य रखती है।
चित्रभाषा : एक मूक अभिव्यक्ति
जो शांत और गहरी होते हुए
शब्दों से अधिक प्रखर बन जाती है।
चित्रभाषा : एक वरदान
जो हमारे पूर्वजों की अनुकंपा व आशीष
हम पर बरसाती है।
चित्रभाषाः एक मधुर गीत
जो इतिहास, साहित्य, विज्ञान के
बोल हमें सुनाती है।
चित्रभाषा : एक पवित्र ज्योति
जो अज्ञानता के तिमिर को मिटा
ज्ञान का दीप जलाती है।
चित्रभाषा : एक निश्छल प्रेम
जो कलाकार को
परमानंद का अनुभव कराती है।
चित्रभाषा : एक मासूम झरना
जो रिक्त मन में
तृप्ति का आभास कराती है।
चित्रभाषा : एक मोहक स्पर्श
जो जड़ में प्राणों का
दुखी हृदय में सुख का बोध कराती है।
चित्रभाषा : एक प्रतिबिंब
जो प्रकृति,मानव, समाज व ज्ञान का
अक्स दर्शाती है।
चित्रभाषा : एक आनंद प्रद क्रीड़ा
जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में
हर विषय को रुचिकर बनाती है।

**डॉ.शिवा अग्रवाल,**
**पीजीटी-फाइन आर्ट्स**
**रावमावि समलेहड़ी, अंबाला कैंट**

# विज्ञान विषय को सही मायने में जीते हैं सत्यपाल सिंह

प्रायोगिक विषय विज्ञान को प्रयोगशाला के प्रायोगिक कार्यों के बिना पढ़ाना अधूरापन-सा है। पिछले कुछ दशकों में प्रयोगशालाएँ और उनकी बहुआयामी गतिविधियाँ कहीं हाशिए पर चली गयी हैं, किंतु शिक्षा विभाग में आज भी कुछ शिक्षक ऐसे हैं, जो प्रयोगशालाओं को आज भी जीवंत बनाए हुए हैं तथा वे विज्ञान की पढ़ाई में प्रयोगशालाओं की अनिवार्यता के पक्षधर, पोषक एवं सजग प्रहरी बने हुए हैं। ऐसे ही एक कर्मठ, समर्पित विज्ञान अध्यापक हैं सत्यपाल सिंह, जिन्होंने सदैव प्रयोगशाला में ही पढ़ाया है तथा अपनी प्रायोगिक दक्षता एवं कौशल से नन्हे बाल वैज्ञानिक तैयार किए हैं।

रेवाड़ी जिले के गाँव डहीना स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में विज्ञान अध्यापक के तौर पर सेवारत श्री सिंह इससे पहले रेवाड़ी जिले के गाँव टांकड़ी तथा प्राणपुरा गोपालपुरा में भी अपनी उक्त विशिष्टता के चलते प्रेरक प्रायोगिक पक्ष जीए हैं तथा अपनी खास प्रयोगशालाओं के चलते चर्चा में रहे हैं। करीब डेढ़ दशक पहले सरकारी सेवा में आए श्री सिंह को अपने उक्त तीनों स्कूलों में प्रयोगशाला के नाम पर एक बंद कक्ष मिला था, जिनमें सब कुछ अलमारियों में बंद ही जर्जर हो रहा था, किंतु उन्होंने अपनी रुचि-अभिरुचि के चलते कक्षों को बेहद मनोहारी जीवंत प्रयोगशाला में तब्दील किया। आजकल नये स्कूल डहीना में भी उनका यह अभियान जारी है। अपने पिछले राजकीय मिडिल स्कूल प्राणपुरा गोपालपुरा में वे ऐसे प्रयोगशाला छोड़कर आए हैं, जहाँ विज्ञान के सभी प्रयोग विद्यार्थी स्वयं करते हैं, सभी चित्र उन्होंने दीवारों पर स्वयं बना रखे हैं, पूरी प्रयोगशाला करीने से डिस्पले की हुई है तथा विद्यार्थियों को प्रिज्म, लैन्स, स्लैब, दर्पण, ओह्मनियम, स्लाइड बनवाना,

प्याज झिल्ली स्लाइड, स्टोमेटा रन्ध्र स्लाइड, बच्चों द्वारा बनवाना दिखाना, माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी), टेलिस्कोप (दूरदर्शी), रक्त प्रवाह मापन मंत्र, विभवांतर, एम्पीयर, 15 वोल्ट जनरेटर, आवर्त सारणी, अम्ल क्षार संबंधी प्रयोगी, ऑक्सीजन, कार्बन डाइऑक्साइड व हाइड्रोजन गैस बनाना, चुम्बक के सभी प्रयोग, फूल के विभिन्न भागों का डायसेक्शन, यांत्रिक ऊर्जा से विद्युत ऊर्जा आदि प्रयोग प्रयोगशाला में कराये जाते रहे हैं। अब नये स्कूल में प्रयोगशाला तैयारी में वे गत कई माह से जुटे हैं।

आठवीं तक वे विज्ञान एवं गणित विषय में विद्यार्थियों को उक्त प्रयोगधर्मिता से इतना पारंगत कर देते हैं कि उनके अधिकांश विद्यार्थी मेरिट हासिल करते हैं तथा विज्ञान संकाय ही लेते हैं। इतना ही नहीं अब तक उनके पढ़ाये तीन दर्जन से ज्यादा विद्यार्थियों ने वजीफा (एनएमएमएस) प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। उनके नन्हे बाल वैज्ञानिक जहाँ राज्य स्तर पर चार बार बाल विज्ञान कांग्रेस में धूम मचा चुके हैं, वहीं अन्य विज्ञान प्रतियोगिता व प्रदर्शनी प्रारूप में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज करा चुके हैं।

प्रदेश शिक्षा विभाग की तीसरी से पाँचवीं तक की झरोखा शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित ईवीएस पुस्तकों में लेखकीय के योगदान देने के अलावा श्री सिंह ने छठी से आठवीं की कक्षाओं की विज्ञान पुस्तकों हेतु सभी प्रकार का चित्रांकन कार्य स्वयं किया है, जिसे प्रदेश में पढ़ा व पढ़ाया जा रहा है। प्रायोगिक कार्यों के अलावा वे एक समर्पित शिक्षक के तौर पर लब्धप्रतिष्ठ हैं। इतिहास एवं राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर होने के अलावा, एमएड व प्रभाकर हिंदी की पढ़ाई उनके व्यक्तित्व को उच्च आयाम देती है। एक ओर जहाँ प्रयोगशालाएँ हैं, वहाँ उनके कार्य न होना तथा दूसरी ओर प्रयोगशाला न होने पर तैयार करके उसका दैनिक प्रयोग करना अनायास बहुत कह जाता है। बिना प्रयोगशाला एवं बिना प्रायोगिक गतिविधियों के थ्योरी रटवाने वाले विज्ञान अध्यापकों एवं प्राध्यापकों की एक बड़ी फौज के बीच सत्यपाल सिंह सरीखे प्रयास आशा की एक नयी किरण हैं।

**सत्यवीर नाहड़िया**
**प्राध्यापक रसायन शास्त्र**
**राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खोरी**
**जिला- रेवाड़ी**

# एक कुशल चित्रकार है कैथल की शोभा

जब एक कुशल व नामी कलाकार कागज या कैनवास पर रंग भर कर अपनी ब्रश चलाता है तो मूर्त या अमूर्त एक सुन्दर सी कृति उभर आती है। कलाकार की हर कूँची चित्र को नया व सार्थक रूप देती है, किन्तु जब एक विद्यालय में पढ़ने वाला छात्रा या छात्रा बड़े कलाकार की तरह ब्रश चलाता या चलाती हो तो सुखद आश्चर्य होता है। हरियाणा के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में ही बहुत से ऐसे नन्हे चित्रकार, गायक, डांसर, शिल्पी हैं कि देखने वाला वाह-वाह कर उठता है। ऐसे विद्यार्थियों को देखकर पता चलता है कि सरकारी स्कूलों में प्रतिभा की कभी नहीं, बल्कि बहुत से बच्चे विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं।

ऐसी ही एक विलक्षण प्रतिभा की धनी है कैथल के ग्योंग गाँव के आरोही मॉडल सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में बारहवीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा शोभा। रोशन लाल व सुशीला देवी के घर जन्मी व ठेठ गाँव की रहने वाली छात्रा शोभा एक कुशल चित्रकार है। पेंटिंग बनाना, अच्छी पुस्तकें पढ़ना, संगीत सुनना व लेखन कार्य करना इसे अच्छा लगता है। जब ये किसी भी विषय पर पेंटिंग बनाती है तो इस किशोर चित्रकार के हाथ किसी अनुभवी चित्रकार की तरह चलते हैं। जैसे-जैसे ये कागज या कैनवास पर ब्रश घुमाती है एक सुन्दर चित्र बनता जाता है। इसकी उम्र व उम्मीद से बढ़िया पेंटिंग जैसे ही तैयार होती है, देखने वाला चकित रह जाता है। अगर ये किसी प्रतियोगिता में पेंटिंग कर रही हो तो इस द्वारा बनाई पेंटिंग अपने आप बोलने लग जाती है कि मैं भी यहाँ मौजूद हूँ। वैसे तो शोभा जरूरत के अनुसार किसी भी विषय पर पेंटिंग बना लेती है, किन्तु प्राकृतिक सुषमा, बर्फ से लदे पहाड़, झरने, नदियाँ, घाटियाँ, हरी-भरी वादियाँ, जंगल, पशु-पक्षी, हरे-भरे खेत, सूर्यास्त या सूर्योदय के दृश्य बेहद लुभाते हैं। यही कारण है कि ये प्राकृतिक शोभा के चित्र अधिक बनाती है। अन्य रंगों के साथ शोभा जल-रंग बड़ी दक्षता से उपयोग कर लेती है। शोभा पेंटिंग प्रतियोगिता में खण्ड, जिला, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार जीत चुकी है, पिछले दिनों शिक्षा विभाग, पंचकूला द्वारा केरल में लगाए गए नेशनल एडवेंचर कैम्प में भी प्रथम स्थान प्राप्त करके सबका ध्यान अपनी ओर खींचा। केरल कैम्प में शामिल होने आए शिक्षा विभाग के तत्कालीन संयुक्त निदेशक, राजीव प्रसाद ने भी शोभा की पेंटिंग देखकर इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। शोभा कम उम्र की श्रेष्ठ चित्रकार है। अगर इसे उचित मार्गदर्शन व प्रोत्साहन मिला तो ये एक दिन चित्रकला के क्षेत्र में नाम कमाएगी।

शोभा चित्राकार के साथ अच्छी लेखिका भी बन सकती है। इसके लेखन के बारे में तब पता चला जब नेशनल स्तरीय एडवेंचर कैम्प, केरल में यात्रा वृतान्त लेखन प्रतियोगिता में इसने 200 छात्राओं में बाजी मारी तथा अवार्ड हासिल किया। शोभा रंगोली व स्लोगन प्रतियोगिताओं में भी कई बार अवार्ड जीत चुकी है। रंगोली में दो बार जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार जीत चुकी है। सांझी बनाओ प्रतियोगिता में तीन बार प्रथम स्थान हासिल कर चुकी है तथा निबन्ध-लेखन में कई अवार्ड जीते हैं। शोभा निःसन्देह एक अच्छी कलाकार व होनहार लेखिका है। ये अपनी सफलताओं के लिए अपने माँ-बाप के अलावा प्राचार्य डॉ.मनीष सिंगला, अध्यापिका डॉ.कमलेश कुमारी व अध्यापन स्टाफ को मानती है। इसका लक्ष्य एक अच्छी चित्रकार बनने का है। इसके लिए ये कड़ी मेहनत कर रही है। ऐसे बच्चों पर सचमुच शिक्षा विभाग को गर्व होना चाहिये, क्योंकि ऐसे ऊर्जावान बच्चे ही होते हैं जो समाज व राष्ट्र के विकास में, समृद्धि में अपनी अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

**- डॉ.ओमप्रकाश कादयान**
**राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय**
**एमपी रोही, फतेहाबाद**

# क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो! आपने देखा होगा कि खटाई डालने से दूध फट जाता है. क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है? अगर नहीं, तो आइये मैं आपको बताती हूँ-

दूध में जल, वसा, कार्बोहाइड्रेड तथा अकार्बनिक लवण होते हैं। केसीन नामक फास्फो प्रोटीन भी उपस्थित होता है। जब कोई अम्ल या खटाई दूध में मिलाई जाती है तो यह वसा तथा केसीन आपस में मिलकर थक्का बना लेते है तथा यह पात्र की तली में बैठ जाते हैं। तथा जल, कार्बोहाइड्रेड व लवण ऊपर तैरते रहते हैं। इस क्रिया को हम दूध का फटना कहते हैं।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

**- तुम्हारी यामिका दीदी**

# सामान्य ज्ञान

प्रश्न- 1. चंद्रग्रहण कब होता है?

उत्तर - जब पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा के बीच आ जाती है।

प्रश्न -2 विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप कौन सा है?

उत्तर - एशिया

प्रश्न -3 डीसीएम ट्रॉफी का सम्बन्ध किस खेल से है?

उत्तर - फुटबॉल से

प्रश्न -4 जम्मू किस नदी के किनारे स्थित है -

उत्तर - तवी

प्रश्न -5 कौन सा शहर अफगानिस्तान की राजधानी है?

उत्तर - काबुल

प्रश्न -6 किस जानवर को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है?

उत्तर - ऊँट को

प्रश्न -7 किस नेता को लौह पुरुष के नाम से जाना जाता है?

उत्तर - सरदार वल्लभ भाई पटेल को

# पहेलियाँ

1.चाहे तत्त्व भले हों यौगिक, लेते सदा सहारा।
ऐसे अक्षर या समूह का, नाम कौन-सा प्यारा ।।

2.बने अवयवों से पदार्थ हैं, यह सबको मालूम।
क्या विधि कहलाती जो इनका, विघटन करती झूम ।।

3.रहें स्वाद में बेहद खट्टे, हाइड्रोजन मौजूद।
नीला लिटमस लाल बनाते, नाम बताओ कूद ।।

4.साबुन जैसे चिकने होते, कड़वा-कड़वा स्वाद।
करें लाल लिटमस को नीला, करो नाम को याद ।।

5.अमाशय में अधिक अम्लता, घातक हो हरदम।
कहो कौन जो यही अम्लता, किया करे है कम ।।

6.अगर अमल से हाइड्रोजन का, कर दें हम विस्थापन।
किस यौगिक का बोलो तब-तब, हो जाता उत्पादन ।।

7.पानी में अणु रहें उपस्थित, इसको हम क्या कहें।
कुछ लवणों के क्रिस्टल से ये, अणु हैं जुड़े रहें ।।

8.आमतौर पर नर्म तत्त्व हैं, ताकत से भरपूर।
ऊष्मा व विद्युत को रोकें, दुनिया में मशहूर ।।

9.लाल रहे जो, नीला भी हो, जाँचा-परखा सबका।
जाँच रसायनों की करता है, नाम बताओ उसका ।।

10.मिश्रधातुएँ या कि धातुएँ, होती इनका धाम।
पानी और ऑक्सीजन से, करती काम तमाम ।।

उत्तर :- 1.रासायनिक सूत्र 2.अपघटन 3.अम्ल 4.क्षार 5.प्रतिअम्ल 6.लवण 7.क्रिस्टलन 8.अधातुएँ 9.लिटमस 10.संक्षारण

**- डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल**
**सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा**

# घमंडी सियार

वर्षों पुरानी बात है हिमालय की किसी कन्दरा में एक बलिष्ठ शेर रहा करता था। एक दिन वह एक भैंसे का शिकार और भक्षण कर अपनी गुफा को लौट रहा था। तभी रास्ते में उसे एक मरियल-सा सियार मिला जिसने उसे दंडवत् प्रणाम किया।

जब शेर ने उससे ऐसा करने का कारण पूछा तो उसने कहा, सरकार मैं आपका सेवक बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे आप अपनी शरण में ले लें। मैं आपकी सेवा करुँगा और आपके द्वारा छोड़े गये शिकार से अपना गुजर-बसर कर लूँगा। शेर ने उसकी बात मान ली और उसे मित्र की तरह अपनी शरण में रखा। कुछ ही दिनों में शेर द्वारा छोड़े गये शिकार को खा-खा कर वह सियार बहुत मोटा हो गया।

प्रतिदिन सिंह के पराक्रम को देख-देख उसने भी स्वयं को सिंह का प्रतिरूप मान लिया। एक दिन उसने सिंह से कहा, अरे सिंह ! मैं भी अब तुम्हारी तरह शक्तिशाली हो गया हूँ। आज मैं एक हाथी का शिकार करूँगा और उसका भक्षण करूँगा और उसके बचे-खुचे मांस को तुम्हारे लिए छोड़ दूँगा।

चूँकि सिंह उस सियार को मित्रवत् देखता था, इसलिए उसने उसकी बातों का बुरा न मान उसे ऐसा करने से रोका। भ्रम-जाल में फँसा वह दम्भी सियार सिंह के परामर्श को अस्वीकार करता हुआ पहाड़ की चोटी पर जा खड़ा हुआ। वहाँ से उसने चारों ओर नज़रें दौड़ाई तो पहाड़ के नीचे हाथियों के एक छोटे से समूह को देखा। फिर सिंह-नाद की तरह तीन बार सियार की आवाजें लगा कर एक बड़े हाथी के ऊपर कूद पड़ा। किन्तु हाथी के सिर के ऊपर न गिर वह उसके पैरों पर जा गिरा। और हाथी अपनी मस्तानी चाल से अपना अगला पैर उसके सिर के ऊपर रख आगे बढ़ गया। क्षण भर में सियार का सिर चकनाचूर हो गया और उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

पहाड़ के ऊपर से सियार की सारी हरकतें देखते हुए सिंह ने कहा- जो मूर्ख और घमण्डी, होते हैं, उनकी ऐसी ही गति होती है।

**सच है घमंड और मूर्खता का साथ बहुत गहरा होता है, इसलिए कभी भी ज़िंदगी में किसी भी समय घमंड नहीं करना चाहिए। इतिहास गवाह है कि रावण हो या सिकंदर, सबका घमंड एक दिन अवश्य टूटा है और उनके विनाश का कारण भी बना है।**

**-पंचतंत्र से**

# रेलगाड़ी

रुकी नहीं हम बोले रुक-रुक
रेलगाड़ी करती छुक-छुक

सबसे आगे इंजन दौड़े
आपस में सब डिब्बे जोड़े

बिजली खाती डीजल खाती
कू-कू करके दौड़ लगाती

ये दिल्ली, कलकत्ता जाती
सब नगरों की सैर कराती

जब थकती है तब सो जाती
रोज नहाकर स्टेशन जाती

**-सुनीता काम्बोज**
**संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान**
**लौंगोवाल, जिला - संगरूर, पंजाब -148106**

कोई मेरी भी सुनो, मैं हिन्दी हूँ, स्तब्ध हूँ, समझ में नहीं आता कहाँ से शुरू करूँ? कैसे शुरू करूँ? मैं, जिसकी पहचान इस देश से है, इसकी माटी से है। इसके कण-कण से है। अपने ही आँगन में बेइज्जत कर दी जाती हूँ! कहने को संविधान के अनुच्छेद 343 में मुझे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य है कि वह मेरा प्रसार बढ़ाए, पर आज यह सब मुझे क्यों कहना पड़ रहा है? नहीं जानती थी मेरा किसी राज्य-विशेष में किसी की जुबान पर आना अपराध हो सकता है।

मन बहुत दुखता है जब मुझे अपनी ही संतानों को यह बताना पड़े कि मैं भारत के 70 प्रतिशत गाँवों की अमराइयों में महकती हूँ। मैं लोकगीतों की सुरीली तान में गूँजती हूँ। मैं नवसाक्षरों का सुकोमल सहारा हूँ। मैं जनसंचार का स्पंदन हूँ। मैं कलकल-छलछल करती नदिया की तरह हर आम और खास भारतीय हृदय में प्रवाहित होती हूँ। मैं मंदिरों की घंटियों, मस्जिदों की अजान, गुरुद्वारे की शबद और चर्च की प्रार्थना की तरह पवित्र हूँ। क्योंकि मैं आपकी, आप सबकी-अपनी हिन्दी हूँ।

विश्वास करो मेरा कि मैं दिखावे की भाषा नहीं हूँ, मैं झगड़ों की भाषा भी नहीं हूँ। मैंने अपने अस्तित्व से लेकर आज तक कितनी ही सखी भाषाओं को अपने आँचल से बाँध कर हर दिन एक नया रूप धारण किया है। फारसी, अरबी, उर्दू से लेकर आधुनिक बाला अंग्रेजी तक को आत्मीयता से अपनाया है। सखी भाषा का झगड़ा मेरे लिए नया नहीं है। इससे पहले भी मेरी दक्षिण भारतीय बहनों की संतानों ने यह स्वर उठाया था, मैंने हर बार शांत और धीर-गंभीर रह कर मामले को सहजता से सुलझाया है। लेकिन इस बार मेरी अनन्य सखी मराठी की संतानें मेरे लिए आतंक बन कर खड़ी हैं। इस समय जबकि सारे देश में विदेशी ताकतों का खतरा मँडरा रहा है, ऐसे में आपसी दीवारों का टकराना क्या उचित है? लेकिन कैसे समझाऊँ और किस-किस को समझाऊँ? महाराष्ट्र में कोई दम ठोंक कर कहता है कि मेरा अस्तित्व मिटा देगा। मैं क्या कल की आई हुई कच्ची-पक्की बोली हूँ जो मेरा नामोनिशान मिटा दोगे? मैं इस देश के रेशे-रेशे में बुनी हुई, अंश-अंश में रची-बसी ऐसी जीवंत भाषा हूँ जिसका रिश्ता सिर्फ जुबान से नहीं दिल की धड़कनों से हैं। मेरे दिल की गहराई का और मेरे अस्तित्व के विस्तार का तुम इतने छोटे मन वाले भला कैसे मूल्यांकन कर पाओगे? इतिहास और संस्कृति का दम भरने वाले छिछोरी बुद्धि के प्रणेता कहाँ से ला सकेंगे वह गहनता जो अतीत में मेरी महान संतानों में थी।

मैंने तो कभी नहीं कहा कि बस मुझे अपनाओ। बॉलीवुड से लेकर पत्रकारिता तक और विज्ञापन से लेकर राजनीति तक हर एक ने नए शब्द गढ़े, नए शब्द रचे, नई परंपरा, नई शैली का ईजाद किया। मैंने कभी नहीं सोचा कि इनके इस्तेमाल से मुझमें विकार या बिगाड़ आएगा। मैंने खुले दिल से सब भाषा का, भाषा के शब्दों का, शैली और लहजे का स्वागत किया। यह सोचकर कि इससे मेरा ही विकास हो रहा है। मेरे ही कोश में अभिवृद्धि हो रही है। अगर मैंने भी इसी संकीर्ण सोच को पोषित किया होता कि दूसरी भाषा के शब्द नहीं अपनाऊँगी तो भला उद्दाम आवेग से इठलाती-बलखाती यहाँ तक कैसे पहुँच पाती? मैंने कभी किसी भाषा को अपना दुश्मन नहीं समझा। किसी भाषा के इस्तेमाल से मुझमें असुरक्षा नहीं पनपी। क्योंकि मैं जानती थी कि मेरे अस्तित्व को किसी से खतरा नहीं है। पर महाराष्ट्र से छनकर आते घटनाक्रमों से एक पल के लिए मेरा यह विश्वास डोल गया। पिछले दिनों मैं और मेरी सखी भाषाएँ मिलकर त्रिभाषा फार्मूला पर सोच ही रही थीं। लेकिन इसका अर्थ यह तो कतई नहीं था कि हमारी संतान एक-दूसरे के विरुद्ध नफरत के खंजर निकाल लें। यह कैसा भाषा-प्रेम है? यह कैसी भाषाई पक्षधरता है? क्या माँ से प्रेम दर्शाने का यह तरीका है कि मौसी की गोद में बैठने पर अपने ही भाई को दुश्मन समझ बैठो। क्या लगता है आपको, इससे मराठी खुश होगी? नहीं हो सकती। हम सारी भाषाएँ संस्कृत की बेटियाँ हैं। बड़ी बेटी का होने का सौभाग्य मुझे मिला, लेकिन इससे अन्य भाषाओं का महत्त्व कम तो नहीं हो जाता। और यह भी तो सच है न कि मुझे अपमानित करने से मराठी का महत्त्व बढ़ तो नहीं जाएगा?

**लेखक- अज्ञात ( फेसबुक से )**

# बच्चे से भावात्मक रूप से जुड़ें

बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं। विद्यालय से आने के बाद वह अपने साथियों के साथ खेलना चाहते हैं और चाहते हैं कि बैठकर पढ़ना, लिखना न पड़े, परन्तु स्वयं करके सीखना और प्रोत्साहित करना भी शिक्षा और जीवन विकास के लिए आवश्यक है । आप कुछ इस प्रकार से दिनचर्या बनाएँ कि बालक स्वयं कार्य करने को उत्सुक हो सके।

**नकारात्मकता से बचाएँ-** यदि बच्चा ठीक प्रकार से काम नही करता तो भी उसे हतोत्साहित न करें उसे अगली बार और अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित करें। अधिकाधिक अभ्यास और सही प्रकार से समझने के लिए प्रेरित करें। गलतियाँ होना स्वाभाविक है परन्तु दोहराव होना चिन्ताजनक है।

**सहृदय रहें-** अपने बच्चे के साथ आत्मीयता का भाव रखें जिससे वह आपसे सहजता से बात कर सके। बच्चे के साथ मित्रवत व्यवहार करते हुए उसकी समस्या का समाधान करने का प्रयास करें। कोई भी अच्छा काम करने पर खुशी प्रदर्शित करें और पुरस्कार स्वरूप कुछ दे दें।

**निकटता का भाव-** नौकरीपेशा होने के कारण अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों की तरफ ध्यान नहीं दे पाते। बच्चे के लिए माता-पिता का विशेष कर माता का निकट रहना आवश्यक है। समयाभाव के कारण वास्तव में माता-पिता बच्चे के स्कूल में, जीवन में क्या-क्या घटित हो जाता है। उससे अनभिज्ञ रहते हैं। माता-पिता होने के नाते यह आपका कर्तव्य बनता है कि आप अपने बच्चे के लिए समय निकालें और प्रतिदिन उससे विद्यालय और मित्रों के बारे में बातचीत करें, जिससे उसे यह अहसास हो कि आप उस पर नजर रख रहे हैं और उसके साथ हैं।

**ज्ञानवर्धन करें-** बच्चों को विषय सिखाने के लिए अधिक सख्ती न दिखाएँ। केवल बच्चों को मूल समझने के लिए प्रेरित करें। उन्हें ज्ञान का उतना अंश सिखाएँ जो आवश्यक है। तत्पश्चात् ज्ञान का विस्तार करें। बच्चों को मेन फैक्ट्स समझने में मदद करें। उनसे तर्क संगत प्रश्न पूछें। किसी भी विषय के मूल को यानी कंसेप्ट को यदि बच्चा समझता है तो वह दूर तक जा सकता है। उसे एक बार में उतना सिखाएँ जितना वह ग्रहण कर सके। बालक के ज्ञान का विस्तार करने के लिए अधिकाधिक प्रोत्साहित करें।

**सीमा वधवा**
**कनिष्ठ विशेषज्ञ**
**भाषानुभाग, एससीईआरटी गुरुग्राम, हरियाणा**

## 2019

### सितंबर- अक्टूबर माह
### के त्यौहार व विशेष दिवस

5 सितंबर - शिक्षक दिवस
10 सितंबर- मुहर्रम
14 सितंबर- विश्व प्राथमिक उपचार दिवस
14 सितंबर - हिंदी दिवस
16 सितंबर - ओजोन दिवस
23 सितंबर- हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस
27 सितंबर - विश्व पर्यटन दिवस
29 सितंबर- महाराजा अग्रसेन जयंती
2 अक्टूबर- महात्मा गांधी जयंती
4 अक्टूबर- विश्व मुस्कान दिवस
5 अक्टूबर- विश्व शिक्षक दिवस
8 अक्टूबर- दशहरा
10 अक्तूबर - विश्व डाक दिवस
11 अक्टूबर- अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस
13 अक्तूबर - करवा चौथ
27 अक्टूबर- दीवाली
28 अक्टूबर- विश्वकर्मा दिवस
28 अक्टूबर- गोवर्धन पूजा

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

# Choosing among children
## Early childhood investments in India

Saravana Ravindran

Early childhood development programmes have become increasingly common in developing countries. This article analyses historical administrative data from the roll-out of India's Integrated Child Development Services programme and finds significant long-term positive health, education, and labour-market impacts for adults who were exposed to the programme as children. However, siblings of children with greater programme exposure have worse outcomes as parents reallocated investments away from them.

The question of how to build human capital with limited resources remains a key policy problem in developing countries. Several developing countries have responded with direct provision of health and education services for young children. As early childhood development programmes

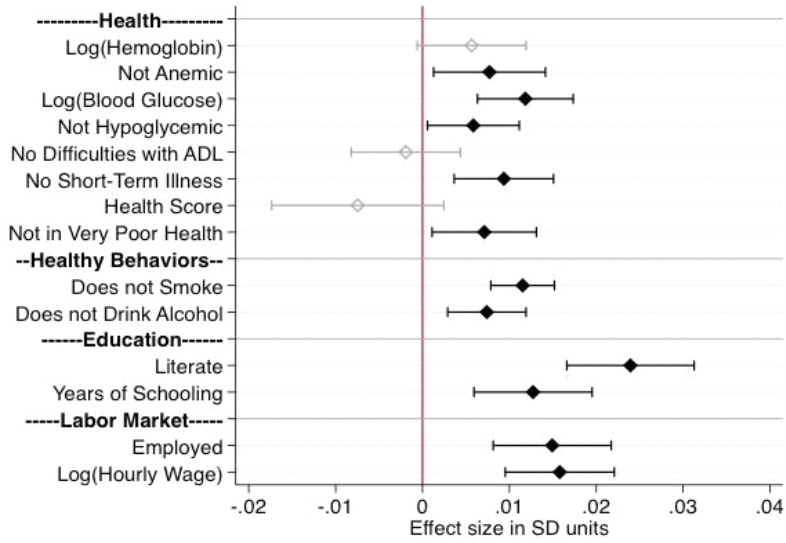


Figure 1. Long-term impacts of Integrated Child Development Services

become increasingly common in developing countries, it is important to understand how parents respond to such programmes. Do parents reallocate their investments over time to invest earlier or later in children? Do parents reallocate their investments across children to reinforce programme exposure or compensate for lack of exposure to such programmes? These questions are important for two reasons. First, they enable us to understand the mechanisms behind the large impacts that we see from early childhood programmes (Currie and Vogl 2013, Almond and Currie 2011). Second, studying sibling spillovers helps us to understand who benefits and who is harmed from such programmes.

In a recent paper (Ravindran 2018), I study these questions using historical administrative data (1975-2016) from the roll-out of the Integrated Child Development Services (ICDS) programme in India, the world's largest early childhood development programme. The ICDS programme is an integrated health and pre-school education programme for children with an age eligibility criterion stipulating that services be provided to pregnant mothers and children under six years of age. Exploiting variation over time and across India, I use a research design that compares children born in different districts within the same year and state, while also controlling for a number of individual characteristics.

First, I show that the ICDS programme had significant positive long-run health, education, and labour-market impacts for adults who were exposed to the programme as young children. Second, I consider a number of parental investments in children for nutrition and educational expenses and show that parents reinforce exposure to the government programme in two ways: (i) parents front-load their investments to earlier ages of their child, and (ii) parents invest more in children exposed to the programme, at the expense of siblings who are not exposed. This addresses a gap in the literature where less attention has been paid to how parents respond to such programmes. I show both theoretically and empirically that reallocation of parental investments depends on (i) the interaction between investments by the government and parents, (ii) parental preferences over inequality in their children's human capital, and (iii) the technology for human capital formation, which maps parental and government investments over time into human capital. I also consider parental responses in the form of labour-supply decisions and show that there were no programme impacts on parents' employment and wages in my setting.

## Positive and persistent programme impacts

The first contribution of my paper is to study the long-run impacts of the world's largest early childhood development programme. The introduction of the ICDS in 1975 provides an excel-

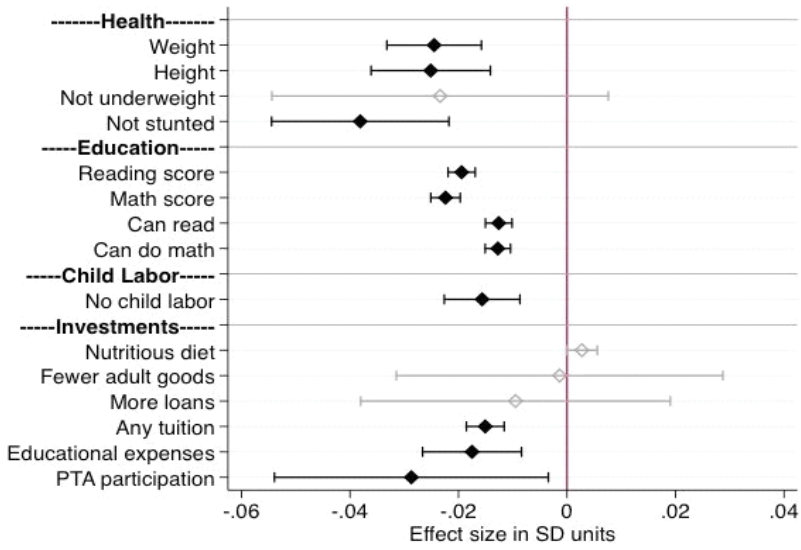


Figure 2. Impacts of increase in average programme exposure of siblings on a child's outcomes

lent setting where individuals exposed to the programme when young are in their thirties, and even forties, today. The challenge, however, is in determining how much exposure to the programme these individuals had. For this purpose, I worked with India's Ministry of Women and Child Development to collect historical administrative data on the ICDS programme that details when and where each ICDS centre was built. Linking this rich data on more than a million centres across India with a large number of household survey datasets enables me to study the long-run impacts of the programme. To the best of my knowledge, this is the first study to present the long-run impacts of the world's largest early childhood development programme.

Notes: (i) ADL refers to Activities of Daily Living, including the ability to speak, hear, and walk normally. (ii) SD refers to standard deviation1.

Figure 1 summarises the long-term impacts of the programme, where programme intensity is defined as the number of ICDS centres per 1,000 children. Each line is a 95% confidence interval2 corresponding to the relevant point estimate3. The programme impacts are measured in standard deviation units and should be interpreted as intent-to-treat (ITT) impacts4. I find positive and persistent programme impacts for adults on a number of health, education, and labour-market outcomes. The Demographic and Health Surveys (DHS) for India and India Human Development Survey (IHDS) provide a number of objective and subjective measures of health from bloodwork and survey questions. I consistently find positive impacts of the programme on these measures of health and healthy behaviours. Furthermore, individuals exposed to the programme when young are also significantly more likely to be literate, have more years of schooling, be employed, and earn a higher wage. These impacts stem from greater programme exposure during the eligible age range to obtain services from the ICDS programme.

## Reallocation of parental investments across children

The second contribution of my research is to study how parents respond to early childhood programmes in developing countries. I develop a theoretical model that delivers several predictions that I can test for with my data. The theory builds on the following intuition: government programmes that are complementary to parental investments raise the benefits from investing in children. Parents respond by increasing investments in children exposed to an increase in programme intensity. However, this may 'crowd out' investments in siblings of children exposed to an increase in programme intensity. Using my data, I then show that parents front-load their investments in children exposed to the programme, while also reallocating investments towards children with programme exposure, at the expense of their siblings. Consequently, siblings of children with greater programme exposure have worse health and education outcomes. Note: PT A refers to Parent-Teacher Associations.

The opening of every ICDS centre generates substantial variation in programme exposure between siblings of different ages. I use this variation to summarise the impacts of an increase in the average programme intensity of siblings on a child's outcomes in Figure 2. The sign of each variable is such that values to the left of zero indicate worse outcomes or lower investments by parents. In addition to the datasets mentioned earlier, I use ASER (Annual Status of Education Report) data for test scores of children and the National Sample Surveys (NSS) for employment outcomes of children and parents. I find consistently negative impacts from having siblings exposed to greater programme intensity, across a number of health, education, and labour outcomes. This is driven by a corresponding reduction in investments by parents. Furthermore, I find that these

crowd-out effects are larger for girls.

## Implications of results

How large are the sibling spillovers in relation to the direct impacts of the programme for exposed individuals? To answer this question, I conduct a comprehensive cost-benefit analysis of the programme. The benefits from the programme arise due to the direct wage impacts and health impacts that I monetise using the reduction in lost days of work. Taking into account these direct benefits yields an internal rate of return (IRR) of 9%5. Taking into account both the direct and indirect impacts, however, yields an IRR of 8%, a 10% decrease. These findings highlight that the overall impacts of early childhood programmes depend on both the direct impacts on exposed cohorts, as well as the indirect impacts that arise due to the reallocation of parental investments. Taken together, the results help us understand the mechanisms behind the positive impacts of early childhood development programmes and the negative spillovers of such policies.

## Notes:

- Standard deviation is a measure that is used to quantify the amount of variation or dispersion of a set of values from the mean value (average) of that set.
- A confidence interval is a range computed from observed data that likely contains the true value of an unknown population parameter. Most commonly, the 95% confidence level is used; this means that the fraction of calculated confidence intervals that contain the true population parameter tends toward 95%.
- A single value given as an estimate of a parameter of a population is called point estimate.
- An intent-to-treat analysis presents results for all individuals exposed to the programme, and does not focus exclusively on the impact of the programme for individuals who choose to take it up.
- The internal rate of return is a measure of profitability that is used to compare projects in terms of the rate of return, or the rate at which the benefits exceed the costs.

**https://www.ideasforindia.in//topics/human-development/choosing-among-children-early-childhood-investments-in-india.html**
**"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"**

**New York University**
**saravana.ravindran@nyu.edu**

# ATAL TINKERING LABs

To promote a culture of innovation and entrepreneurship in the country, the Government of India has initiated a flagship program- Atal Innovation Mission (AIM). The objective of Atal Innovation Mission is to develop new programmes and policies for fostering innovation in different sectors of the economy, provide platform and collaboration opportunities for different stakeholders, create awareness and create an umbrella structure to oversee innovation ecosystem of the country.

**In the first year of establishment, AIM has taken five major initiatives:**

- **Atal Tinkering Labs -** Creating problem solving mindset across schools in India.

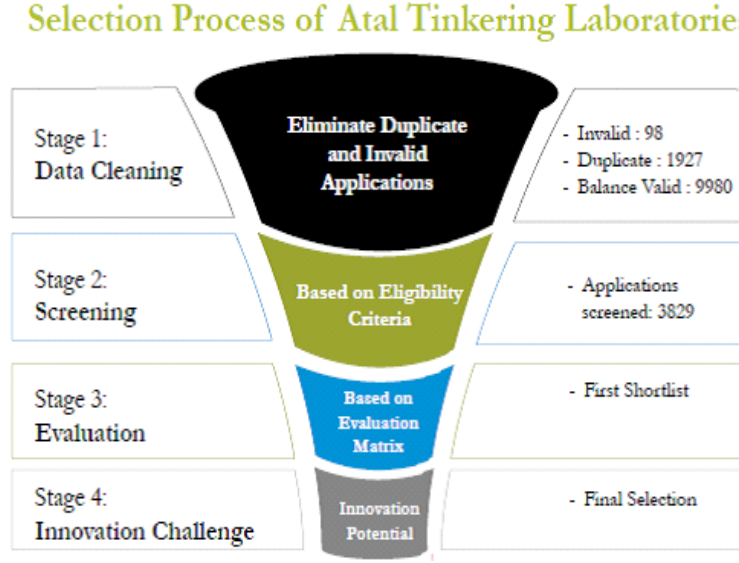

- **Atal Incubation Centers**-Fostering world class startups and adding a new dimension to the incubator model.
- **Atal New India Challenges**-Fostering product innovations and aligning them to the needs of various sectors/ministries.
- **Mentor India Campaign**- A national Mentor network in collaboration with public sector, corporate and institutions, to support all the initiatives of the mission.
- **Atal Community Innovation Center**- To stimulate community centric innovation and ideas in the unserved /under-served regions of the country.
- **ARISE**-To stimulate innovation and research in the MSME industry.

### What are Atal Tinkering Labs:-

Innovation Mission is establishing Atal Tinkering Laboratories (ATLs) in schools across India. The vision is to 'Cultivate one Million children in India as Neoteric Innovators'. The objective of this scheme is to foster curiosity, creativity and imagination in young minds; and inculcate skills such as design mindset, computational thinking, adaptive learning, physical computing etc.

### Key Features of ATL

ATL is a work space where young minds can give shape to their ideas through hands on do-it-yourself mode; and learn innovation skills. Young children will get a chance to work with tools and equipment to understand the concepts of STEM (Science, Technology, Engineering and Maths). ATL would contain educational and learning 'do it yourself' kits and equipment on – science, electronics, robotics, open source microcontroller boards, sensors and 3D printers and computers. Other desirable facilities include meeting rooms and video conferencing facility.

In order to foster inventiveness among students, ATL can conduct different activities ranging from regional and national level competitions, exhibitions, workshops on problem solving, designing and fabrication of products, lecture series etc. at periodic intervals.

Financial Support to Schools

AIM provides grant-in-aid of Rs. 20 Lakh to each school that includes a one-time establishment cost of Rs. 10 lakh and operational expenses of Rs. 10

## Stage 2: Screening Criteria Explained

1. Maximum Education Grade Offered – should be higher than upper primary
2. Dedicated area for ATL =>1500 sq. ft. and =>1000 sq. ft. for hilly states & islands
3. Number of students from Grade VI – X : 300 for hilly states & islands and 450 for plains
4. Attendance of staff and enrolled students for the past three years – 75%
5. Availability of minimum one functional computer with internet connection
6. Available gathering capacity of more than 30 students at any point
7. Dedicated staff for Science & Mathematics
8. Availability of Computer & Science lab, Library and Playground

## Stage 3: Evaluation Matrix..(contd.)

| S. no | Elements | Marks for every element | Total Marks |
|---|---|---|---|
| 3. | Participation of School in Science and Innovation Related Activities | | |
| 3.1 | Organisation / Participation of school in events | | |
| | Intra-school | 10 | 25 |
| | Inter-school | 15 | |
| 3.2 | Participation of students at individual level | | 25 |
| 3.2.1 | NTSC/Junior Science Talent Search Examination / National Science Olympiad/ Kishore Vaigyanik Protsahan Yojana - Only participation | 5 | |
| 3.2.2 | Scholarships / awards won | | |
| | §3 and above | 15 | |
| | §2 | 10 | |
| | §1 | 5 | |
| 3.2.3 | Notable Alumni in STEM* | 5 | |

* Notable Alumni is a person(s) who belongs to technology background or has 10 years of experience or is an award winner, or has won recognition in the area of STEM, or has research publications, won medal at National/ International level.

lakh for a maximum period of 5 years to each ATL.

### Progress So Far – Orientation Program

On 23rd February, 2018 a day - long orientation program was held at State Council of Educational Research and Training (SCERT), Gurugram for the promotion of ATAL TINKERING LABS (ATLs) based Science education in Haryana where Dr. Ayesha Chaudhary, Project Manager AIM, Mr. R. Ramanan, Director, AIM graced the occasion.

- Two ATL workshops(Nov 2018 and

## Stage 3: Evaluation Matrix..(contd.)

| S. no | Elements | Marks for every element | Total Marks |
|---|---|---|---|
| 4. | **Action Plan of ATL** | | |
| 4.1 | Access | | |
| | Limited to school | 15 | 25 |
| | Open to other schools | 10 | |
| 4.2 | Linkages to mentors | | |
| | In-house / alumni | 10 | 30 |
| | Industry | 12 | |
| | Other schools / colleges | 8 | |
| 4.3 | Plan to tap funding from other sources | | |
| | Institutions' own contribution | 10 | 15 |
| | Through other sources | 5 | |
| 4.4 | Qualifications and involvement of Principal and faculty-in-charge (STEM) | | |
| | Doctorate | 20 | 20 |
| | Postgraduate | 15 | |
| | Graduate | 10 | |
| | No information / non-STEM faculty | 0 | |
| | **Total Marks** | | **200** |

## Stage 3: Evaluation Matrix

| S. no | Elements | Marks for every element | Total Marks |
|---|---|---|---|
| 1. | **Total enrolment of students** | | |
| | Plains (450-600) and hilly & island (300-400) | 15 | 25 |
| | Plains (600-1000) and hilly region (400-600) | 20 | |
| | Plains (>1000) and hilly region (>600) | 25 | |
| 2. | **Results of students in grade X board exams in previous 3 years** | | |
| | 70-80% | 25 | 35 |
| | 80-90% | 30 | |
| | 90% and above | 35 | |

Aug 2019)were organized with the help of IBM-SRF.

- A total of 22 teachers and 26 students participated in the first ATL training program for teachers and students.
- Students were able to understand the basics of Computer Science, work on Computer applications, use the Internet, Email, social Platforms like Blynk, mblock and use Arduino with sensors. There was also a brief on what is Raspberry Pi and 3D Printing.
- Teachers and students got curios and started to work on Arduino, IOTs, think and apply ideas in prototype models for different local issues like road accidents, use of IOTs in defense, traffic signals, smart home automation etc.

## How partners can support ATL in Haryana

IBM-SRF is helping in implementation of ATL project in Haryana Govt. Schools with SCERT.

- **Training –** providing training to 2 teachers and 2 students from each Govt. school of Haryana.
- **Handholding** them to participate in the events conducted by NITI Aayog, Govt. and others.
- **Lab setup & Utilisation –** Helping them in the process of lab setup, queries regarding the same and utilization of the lab.

## Ongoing Govt. Programs

- Appreciation and Recognition of teachers who contribute more in the journey.
- Best Photostories and Case Stories – capturing best practices from ATL schools through videos and pictures.
- Mentorship – Through mentorship training to the ATL Incharges involving mentors from IBM and like – minded organisations.
- Internships
- Following up with the schools through Online / Offline need based support.

Total 112 schools have been selected for ATL labs till date, out of which 21 are govt. schools. During 2018-19, 12 schools were selected where labs are functional now (mentioned in the table). During 2019-20, 9 more schools were selected where labs will be set up soon. In all these schools various activities are planned, so as to build the capacity of faculty and create an environment of innovative thinking among students and community.

New schools, willing to establish ATL labs should visit https://www.aim.gov.in or https://www.niti.gov.in/aim or contact SCERT at etscertharyana@gmail.com .

**Manoj Kaushik**
**Educational Technology Department**
**State Council of Educational Research & Training(SCERT)Haryana, Sohna Road, Gurugram**

**SAtal Tinkering Labs: Status in Haryana Govt. Schools :-**

| S. No | Name of the School | District | School Id | Lab Installed | Setup in Process |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | GMSSSS Sanghi | Rohtak | 2681 | Yes | |
| 2 | Aarohi Model Sr. Sec School, Chhajpur Bapoli | Panipat | 98463695 | Yes | |
| 3 | GSSS Pundri | Kaithal | 2179 | Yes | |
| 4 | BL Govt. Senior Secondary School, Khol | Rewari | 2532 | Yes | |
| 5 | GSSS Bhadson Karnal | Karnal | 1777 | Yes | |
| 6 | GGSSS Bhiwani | Bhiwani | 51281967 | Yes | |
| 7 | GMSSS Mahendargarh | Mahendergarh | 4100 | Yes | |
| 8 | GSSS Pilimandori - Bhattu block | Fatehabad | 3387 | Yes | |
| 9 | GMSSS Bodia Kamalpur | Rewari | | | Yes |
| 10 | GMSSS Kund | Rewari | 2530 | Yes | |
| 11 | Aarohi Model School | Kaithal | 42844526 | Yes | |
| 12 | Aarohi Model School | Mahendergarh | | Yes | |

# Experience hard moments to bring out the Best

**Dr. Himanshu Garg**

Some people needed to be pushed before realizing their potentials and reaching their goals in life. Sometimes we have ability to perform any tedious task but our doubts do not move us forward. Even we do not realize our own caliber until some critical situation arises. This uncertain situation forces and pushes us to play a greater role and then we are surprised to know our own ability.

A man had a very beautiful daughter. When his daughter was ready for marriage, the father sent news around town that all the eligible young men should come to compete in a test which would determine who was fit to marry his daughter. On that day, all was set, all the robust young men came. The rich man took them to his swimming pool and addressed the men: "Any of you who can swim from one end of this swimming pool to the other would marry my daughter. In addition, I'll give him 15 million dollars, a car and a house so they can start their new life well. I shall be waiting to meet my son-in-law at the other end. Good luck!" All were so excited at the prospect of winning, as they started taking off their shirts, a helicopter came over the pool and dropped alligators and crocodiles into it. Immediately, all the men turned back and started wearing their shirts again. Some of them said in desperation, "That's crazy, let's see who would marry that girl, no one will". All of a sudden, they heard a splash in the pool. Everybody watched in amazement as one gentleman waddled across, expertly avoiding the alligators and crocodiles. He crossed the life game in a very short period. Finally, he made it to the other side. The rich man could not believe it. All were surprised and brought him up on their shoulders. But the young man was unconcious. Finally, he got back to his senses and asked "WHO PUSHED ME INSIDE THIS POOL!"

We don't know what we are capable of doing until we are pushed into the situation. Sometimes it takes going through the hard moments to bring out the BEST in us.

Challenges teach us a great lesson in life. It has a huge risk but chances of success also.

May be you all get a Divinely inspired push in your life. Accept the Push to go for the fulfilment of your purpose in life. Accept the challenges confidently to become a Hero!

**Asstt. Professor,**
**Govt. College for Women, Jind**

# THE CHERRY TREE

**Ruskin Bond**

One day, when Rakesh was six, he walked from the Mussoorie bazaar eating cherries. They were a little sweet, a little sour; small, bright red cherries, which had come all the way from the Kashmir valley.

Here in the Himalayan foothills where Rakesh lived, there were not many fruit trees. The soil was stony, and the dry cold winds stunted the growth of most plants. But on the more sheltered slopes there were forests of oak and deodar.

Rakesh lived with his grandfather on the outskirts of Mussoorie, just where the forest began.

Grandfather was a retired forest ranger. He had a little cottage out side the town.

Rakesh was on his way home from school when he bought the cherries. He paid fifty paisa for the bunch. It took him about half an hour to walk home, and by the time he reached the cottage there were only three cherries left.

'Have a cherry, grandfather,' he said, as soon as he saw grandfather in the garden.

Grandfather took one cherry and Rakesh promptly ate the other two. He kept the last seed in his mouth for some time, rolling it round and round on his tongue until all the tang had gone. Then he placed the seed on the palm of his hand and studied it.

'Are cherry seeds lucky?' asked Rakesh.

'Of course.'

'Nothing is lucky if you put it away. If you want luck, you must put it to some use.'

'What can I do with a seed?'

'Plant it.'

So Rakesh found a small spade and began to dig up a flower-bed.

'Hey, not there,' said grandfather. 'I've sown mustard in that bed. Plant it in that shady corner, where it won't be disturbed.'

Rakesh went to a corner of the garden where the earth was soft and yielding. He did not have to dig. He pressed the seed into the soil with his thumb and it went right in.

Then he had his lunch, and ran off to play cricket with his friends, and forgot all about the cherry seed.

When it was winter in the hills, a cold wind blew down from the snows and went whoo-whoo-whoo in the deodar trees, and the garden was dry and bare. In the evenings grandfather and rakesh sat over a charcoal fire, and grandfather told rakesh stories – stories about people who turned into animals, and ghosts who lived in trees, and beans that jumped and stones that wept – and in turn rakesh would read to him from the news paper, grandfather's eyesight being rather weak. Rakesh found the news paper very dull – especially after the stories – but grandfather wanted all the news…

They knew it was spring when the wild duck flew north again, to Siberia. Early in the morning, when he got up to chop wood and light a fire, Rakesh saw the V shaped formation streaming northwards and heard the calls of birds clearly through the thin mountain air.

One morning in the garden he bent to pick up what he thought was a small twig and found to his surprise that it was well rooted. He stared at it for a moment, then ran to fetch grandfather, calling, 'Dada, come and look, the cherry tree has come up!'

'What cherry tree?' Asked grandfather, who had forgotten about it.

'The seed we planted last year – look, it's come up!'

Rakesh went down on his haunches, while grandfather bent almost double and peered down at the tiny tree. It was about four inches high.

'Yes, it's a cherry tree,' said grandfather. 'You should water it now and then.'

Rakesh ran indoors and came back with a bucket of water.

'Don't drown it!' said grandfather.

Rakesh gave it a sprinkling and circled it with pebbles. 'what are the pebbles for?' asked grandfather.

'For privacy,' said rakesh.

He looked at the tree every morning but it did not seem to be growing very fast. So he stopped looking at it – except quickly, out of the corner of his eye. And, after a week or two, when he allowed himself to look at it properly, he found that it had grown – at least an inch!

That year the monsoon rains came early and rakesh plodded to and from school in rain coat and gum boots. Ferns sprang from the trunks of trees, strange looking lilies came up in the long grass, and even when it wasn't raining the trees dripped and mist came curling up the valley. The cherry tree grew quickly in this season.

It was about two feet high when a goat entered the garden and ate all the leaves. Only the main stem and two thin branches remained.

'Never mind,' said grandfather, seeing that rakesh was upset. 'It will grow again: cherry trees are tough.'

Towards the end of the rainy season new leaves appeared on the tree. Then a woman cutting the grass cut the cherry in two.

When grandfather saw what had happened, he went after the woman and scolded her; but the damage could not be repaired.

'May be it will die now,' said rakesh.

'May be,' said grandfather.

But the cherry tree had no intention of dying.

By the time summer came round again, it had sent several new shoots with tender green leaves. Rakesh had grown taller too. He was eight now, a sturdy boy with curly black hair and deep black eyes. 'Blackberry,' grandfather called them.

That monsoon Rakesh went home to his village, to help his father and mother with the planting and ploughing and sowing. He was thinner but stronger when he came back to his grandfather's house at the end of rains, to find that cherry tree had grown another foot. It was now up to his chest.

Even when there was rain, Rakesh would sometimes water the tree. He wanted it to know that he was there.

One day he found a bright green praying mantis perched on a branch, peering at him with bulging eyes. Rakesh let it remain there. It was the cherry tree's first visitor.

The next visitor was a hairy caterpillar, who started making a meal of the leaves. Rakesh removed it quickly and dropped it on a heap of dry leaves.

'Come back when you are a butterfly,' he said.

Winter came early. The cherry tree bent low with the weight of snow. Field mice sought shelter in the roof of the cottage. The road from the valley was blocked, and for several days there was no newspaper, and this made grandfather quite grumpy. His stories began to have unhappy endings.

In February it was Rakesh's birthday. He was nine – and the tree was four, but almost as tall as Rakesh.

One morning, when the sun came out, Grandfather came into the garden. 'Let some warmth get into my bones,' he said. He stopped in front of the cherry tree, stared at it for a few moments, and then called out, 'Rakesh! Come and look! Come quickly before it falls!'

Rakesh and grandfather gazed at the tree as though it had performed a miracle. There was a pale pink blossom at the end of a branch.

The following year there were more blossoms. And suddenly the tree was taller than Rakesh, even though it was less than half his age. And then it was taller than grandfather, who was older than some of the oak trees.

But Rakesh had grown too. He could run and jump and climb trees as well as most boys, and he read a lot of books, although he still liked listening grandfather's tales.

In the cherry tree, bees came to feed on the nectar in the blossoms, and tiny birds pecked at the blossoms and broke them off. But the tree kept blossoming right through the spring, and there were always more blossoms than birds.

That summer there were small cherries on the tree. Rakesh tasted one and spat it out.

'It's too sour,' he said.

'They'll be better next year,' said grandfather.

But the birds liked them – especially the bigger birds, such as the bulbuls and scarlet minivets – and they flitted in and out of the foliage, feasting on the cherries.

On a warm sunny afternoon, when even the bees looked sleepy, Rakesh was looking for grandfather without finding him in any of his favorite places around the house. Then he looked out of the bed room window and saw grandfather reclining on a cane chair under the cherry tree.

'There is just the right amount of shade here,' said grandfather. 'And I like looking at the leaves.'

'They're pretty leaves,' said Rakesh. 'And they are always ready to dance, if there's breeze.'

After grandfather had come indoors, Rakesh went into the garden and lay down on the grass beneath the tree. He gazed up through the leaves at the great blue sky; and turning on his side, he could see the mountain striding away into the clouds. He was still lying beneath the tree when the evening shadows crept across the garden. Grandfather came back and sat down beside Rakesh, and they waited in silence until it was dark.

'There are so many trees in the forest,' said Rakesh. 'What's so special about this tree? Why do we like it so much?'

'We planted it ourselves,' said grandfather. 'That's why it's special.'

'Just one small seed,' said Rakesh, and he touched the smooth bark of the tree that had grown. He ran his hand along the trunk of the tree and put his finger to the tip of a leaf. 'I wonder,' he whispered. 'Is this what it feels to be God?'

**http://englishories.blogspot.com/2014/02/the-cherry-tree-ruskin-bond.html?m=1**

# Weather and Climate Quiz

- Which one of these revolving weather systems is the smallest - hurricane, typhoon, tropical cyclone, tornado? **Tornado**
- Aside of the amusing reference popularized by Frank Zappa, what is the usual cause of a large-scale 'yellow snow' weather effect seen in certain parts of the world? **Pollen**
- What is the line on a weather chart which joins points of equal pressure? **Isobar**
- What colour of a single rainbow is on the inside of the rainbow's arc, given the generally defined seven-colour rainbow? **Violet**
- Who invented the mercury thermometer? **Daniel Gabriel Farenheit**
- Okta is a unit of measurement of what? **Cloud cover**
- What common term refers to the amount of water vapour that is held in the air? **Humidity**

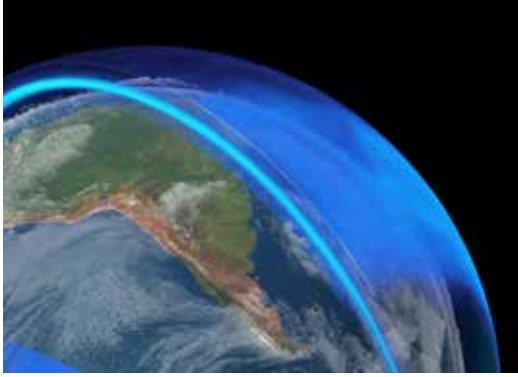



- Treasure Island author Robert Louis Stevenson's father was responsible for what significant weather-related invention? **The Stevenson Screen**
- What shipping forecast area lies immediately South of Forties off the British Isles? **Dogger**
- What common term refers to the movement of air from a high pressure to a low pressure zone? **Wind**
- What is O3 (O followed by the number 3, usually shown in subscript)? **Ozone**
- What wind speed limit applies for setting athletics sprinting and jumping records? **Two metres per second**
- What were all girls from 1953 to 1979, and thereafter alternating boys and girls? **Names of tropical storms or hurricanes**
- What is the circulating Atlantic ocean current which warms Western Europe? **The Gulf Stream**
- What's the more exotic name of the 'Northern Lights' visible under certain conditions in the Northern Hemisphere night sky? **Aurora Borealis**
- What is a haboob? **A sandstorm**
- What is the childlike name given to the significant weather activity linked to sea temperature rise in the Pacific Ocean? **El Nino**
- What are the narrow bands of strong winds called which move around the world between about six and twelve miles high? **Jet Streams**
- What is the unit of measurement of wind speed? **Knot**
- What is the 'ology' term for the study or science of the weather (that's short-term weather systems and effects, not long-term climatology)? **Meteorology**

- What was the name of the 1992 hurricane storm which caused massive damage to the Bahamas, Florida and Louisiana? **Andrew**
- Towards which direction (North, East, South or West) is a rainbow normally seen in the afternoon? **East**
- What cloud term means 'sheet' or 'sheetlike' or 'layer'? **Stratus**
- (Aside from a back and a front) how many sides or points does every snowflake have? **Six**
- The 'Inter-tropical Convergence Zone', where the trade winds meet near the equator to produce a band of relatively very still air, which can strand sailing ships, is known more prosaically as what? **The Doldrums**
- In the Northern hemisphere an area of low pressure produces what wind direction? **Anti-clockwise**
- What is the most common gas in the earth's atmosphere? **Nitrogen**
- What type of cloud is normally associated with thunderstorms? **Cumulonimbus**
- The heaviest recorded hailstones weighed (approximately) 25gms, 100gms, 500gms or 1kg? **1kg**
- What number does 'storm' equate to on the Beaufort Scale of wind force? **10**
- What is minus 40 degrees Farenheit expressed as degrees Centigrade? **minus 40, the same** (Thanks R Partis for this excellent question.)

**https://www.businessballs.com/**

# The Rain

**I hear leaves drinking rain;**
**I hear rich leaves on top**
**Giving the poor beneath**
**Drop after drop;**
**'Tis a sweet noise to hear**
**These green leaves drinking near.**

**And when the Sun comes out,**
**After this Rain shall stop,**
**A wondrous Light will fill**
**Each dark, round drop;**
**I hope the Sun shines bright;**
**'Twill be a lovely sight.**

**William Henry Davies**
**https://www.poemhunter.com/poem/the-rain-3/**

1. Which city in the USA hosted the 1996 Summer Olympic Games (XXVI Olympiad)? **Atlanta**
2. Which Amsterdam-based football club - four-time European Cup winners - are named after a hero of Greek mythology? **AFC Ajax**
3. In which Olympic target-based sport do South Korea hold the record for gold medals, with 23 in total? **Archery**
4. In tennis, what follows a rally at deuce? **Advantage**
5. Which football team moved from their former home in Woolwich to Highbury in north London in 1913? **Arsenal**
6. Which American former world number 1 tennis player was known during his career as "The Punisher"? **Andre Agassi**
7. After the colour of their kit, what is the nickname of the New Zealand national rugby union team? **All Blacks**

8. Which manager stood down as the head coach of England following an investigation by The Daily Telegraph in 2016? **Sam Allardyce**
9. Alongside the Dodgers, what is the nickname of the other Major League Baseball team centred in Los Angeles? (Clue: It's in the name of the city). **Angels**
10. Which seam-bowler from Lancashire is the record wicket-taker in the history of the England cricket team? **James Anderson**
11. Which mountain range has accommodated more Winter Olympic host cities than any other? **Alps**
12. Cassius Clay famously changed his name to what after converting to Islam in 1964? **Muhammad Ali**
13. The US Masters is held every year at which golf course within the state of Georgia? **Augusta**
14. The first modern Olympics were held in 1896 in which European capital city? **Athens**
15. Lionel Messi, Gabriel Batistuta and Diego Maradona are famous football players from which South American nation? **Argentina**
16. The Cardinals are an NFL team based in which south-western US state? **Arizona**
17. What is the name of the biennial cricket series contested between England and Australia? **The Ashes**
18. Which port-city in Belgium hosted the (summer) games of the VII Olympiad in 1920? **Antwerp**
19. What is the real first name of England cricket all-rounder "Freddie" Flintoff? **Andrew**
20. "Soccer" is a shortened form of which two-word term? **Association Football**

**https://www.businessballs.com/quiz/sport-by-letter-a/**

# Seed Ball Recipe

## How To Make SeedBalls With Kids

Using native plant seed balls is a great way to reseed the landscape while teaching kids the importance of native plants and the environment.

### What is a Native Plant Seed Ball?

A seed ball is a marble sized ball made of clay, earth and seeds which is used to replant areas where the natural flora has been destroyed. Also, referred to as seed bombs for guerrilla gardening, who first developed how to make seed balls is a bit of a mystery. Some say it originated in Japan while others claim Greece, but the important thing is that the native plant seed ball has now been used around the world to reseed land that has been abused by man or by Mother Nature herself. Before the development of the native plant seed ball, reseeding some natural areas was difficult. The traditional method of broadcasting seed comes with several major drawbacks.

The seed is sown on top of the soil where it may be baked dry by the sun, blown away by the wind, washed away by heavy rains, or nibbled away by birds or other small wildlife. Very little is left to germinate and grow. Making seed balls addresses all of these problems. These clay balls protect the seed from the heat of the sun. They're heavy enough to be unaffected by the wind or heavy rains and the hard clay casing deters animal nibblers as well. Before we talk about how to make seed balls, let's see how they work.

### Why Seed Balls Work

In dry areas, the shape of the ball actually gives enough shade to conserve moisture. The seeds begin to germinate and the ball breaks apart. The small pile of crumbles provides the start for the root system, but is still heavy enough to anchor the emerging seeds to the ground. The small leaves of the new plants provide enough shade for the soil to conserve more moisture. The plants then mature and produce their own seeds and provide shelter once the second generation seeds fall to the ground. The seeding and regrowth continues until complete plant cover is achieved. Making seed balls gives nature the extra boost it needs to make things right.

### How to Make Seed Balls

Learning how to make seed balls is a great activity for kids. It's fun, easy to do and can be easily adapted to the environmental needs of the community.

The seed ball recipe can be altered simply by changing the seeds. Want to plant wildflowers along a rural highway? How to make flower seed balls is no different than how to make a native plant seed ball. Change the seeds to bird seed and you've got the ingredients for a bird food garden in the suburbs. Turn a vacant city lot into a wonderland of grasses, cosmos and zinnias. Let your kid's imaginations run wild. Making seed balls is a terrific way to spend a rainy afternoon at the kitchen table or out in the garage.

The seed ball recipe is easy to follow and, for older children, doesn't require intense adult supervision. Why not gather the ingredients ahead of time so they're ready for that rainy day!

### Seed Ball Recipe

2 parts potting soil 5 parts pottery clay mix from your local art store 1-2 parts water 1-2 parts seeds of your choice Large tub to mix ingredients Large box to dry and store seed balls

### Directions:

1. Mix the soil, clay and 1 part water thoroughly. There should be no lumps. Slowly add more water until the mixture is the consistency of the toy store molding clay that comes in a can. 2. Add seeds. Keep kneading the dough until the seeds are well mixed in. Add more water if necessary. 3. Take small bits of the clay mixture and roll into ball about one inch in diameter. The balls should hold together easily. If they're crumbly, add more water. 4. Dry seed balls for 24-48 hours in a shady place before sowing or storing. They store best in a cardboard box. Do not use plastic bags. 5. The last step in how to make flower seed balls is sowing them. Yes, you can place them carefully over the area to be planted or you can gently toss them one at a time, which is a lot more fun. Don't bury them and don't water them. You've done your job, now sit back and leave the rest to Mother Nature.

Read more at Gardening Know How: Seed Ball Recipe – How To Make Seed Balls With Kids https://www.gardeningknowhow.com/special/children/making-seed-balls.htm

**By: Jackie Rhoades**

# Amazing Facts

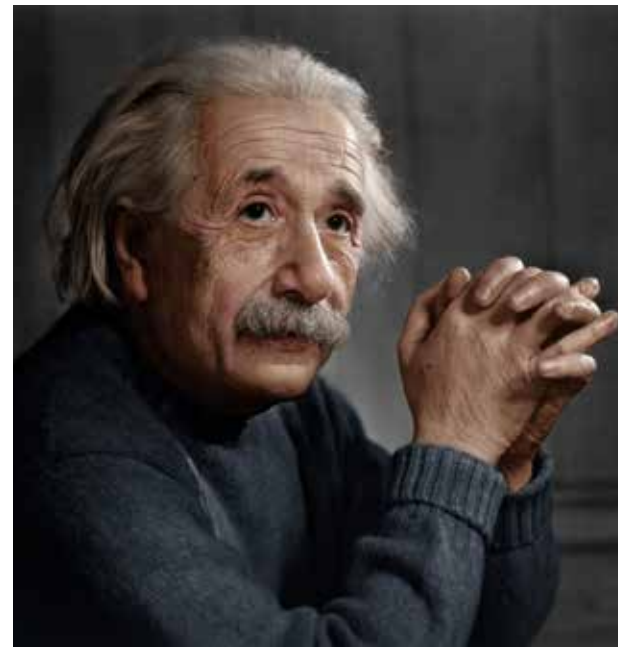

- **The parents of Albert Einstein were worried that he was mentally slow because it took him a long time to learn how to speak.**
- Scientists have discovered that the longer the ring finger is in boys the less chance they have of having a heart attack.
- When the body is resting, it takes in about 10 litres of air every minute.
- The smallest bone in the human body is the stirrup bone, which is located in the ear.
- George Washington had to borrow money to go to his own inauguration.
- There have been over fifty million Mr. Potato Heads sold since it came out in 1952.
- All of Chrysler's PT Cruisers are built in Mexico.
- Movies approximately make five times more from video sales than ticket sales.
- The word Lethologica describes the state of not remembering the word you want to say.
- In 1958, the United States Coast Guard off western Greenland measured the tallest known iceberg at five hundred and fifty feet.
- In every episode of Seinfeld there is a Superman somewhere.
- Baby donkeys or baby mules are also known as "Foals."
- When Sony introduced the walkman, it had a variety of different names in different countries. It was called "Soundabout" in the U.S., "Stowaway" in the U.K., and "Freestyle" in Australia.
- In Canada, the most productive day of the workweek is Tuesday.
- Author Dr. Seuss wrote the book "Green Eggs and Ham" because the editor made him a bet that he could not write a book, which contained less than fifty words.
- Armadillos have four babies at a time, and they are always the same sex
- The tallest mammal in the world is the giraffe.
- Obsessive nose picking is referred to as rhinotillexomania.
- The human heart creates enough pressure when it pumps out to the body to squirt blood 30 feet.
- In ancient Greece, throwing an apple to a girl was a way to propose for marriage.. If the girl caught it, that would mean she accepts.
- Donkeys can live between 30 to 50 years in captivity.
- Medical reports show that about 18% of the population are prone to sleepwalking.
- In Ancient Egypt, cats were often buried with their masters, or in a special cemetary for cats.
- The Danish company Lego, which began in 1932, first manufactured ironing boards, and stepladders.
- Mice will nurse babies that are not their own.
- Elmer Smith was the first player to hit a grand slam in a World Series.
- Ancient Egyptians used the spice Thyme to help preserve mummies.
- In Belgium, 94% of children under the age of fourteen own LEGO products.
- The famous jewelry store Tiffany & Co. was established on September 18, 1837 in New York City. The amount of sales that were made the first day were $4.98.
- Depending on the size, it can take an oyster anywhere from few months to many years to form a pearl.
- In one minute, the heart of a giraffe can pump 160 gallons of blood.
- Storks were a symbol of fertility in Europe and were considered to bring good luck.

**http://www.greatfacts.com/**

# Quiz

# General Knowledge

- What comes from the seed of the tropical Theobroma cacao tree? **Chocolate**
- What ball is worth three points in snooker? **Green**
- Name Francis Drake's ship, in which he circumnavigated the globe, 1577-80? **Golden Hind**
- What skin and eye colouring is associated with jaundice? **Yellow**
- What is Mick Hucknell's band? **Simply Red**
- Ireland is known as The 'what' Isle? **Emerald**
- What term refers to a plan or template? **Blueprint** (from the 1800s design-print process which used blue lines on a white background, or vice-versa)
- Name the renowned shirt maker in Jermyn Street, London? **Thomas Pink**
- What was mined extensively in Cyprus in Roman times, which took its name from the country? **Copper**
- Name Jepser Christiensen's character in the James Bond films Casino Royale and Quantum of Solace? **Mr White**
- Hyacinthoides is the scientific name for what protected (in the UK) spring flowering plant? **Bluebell**
- The equal combination of green and blue light, and the C in CMYK color printing, are what? **Cyan** (the term cyan actually covers a range of blue-green colours depending on the context)
- If this were a cryptic crossword clue it could be 'Poetic Irish county'? **Limerick** (unsurprisingly there is no actual connection between lime and Limerick - the Limerick city/county name evolved from Irish name Luimneach, first recorded in the 11th century, meaning 'bare earth' - and the only explanation for the rhyme term Limerick seems to be an old parlour game/song featuring a repeating chorus "Won't you come to Limerick")
- What is the common name of the Bubonic Plague in the Middle Ages? **The Black Death**
- What is a tone of photography which results from or gives the effect of age? **Sepia**
- What sea has the port city Arkhangelsk (Archangel in English) and Onega Bay? **White Sea** (an inlet of the Barents Sea, north west Russia, close to Finland)
- What is the longest river in South Africa? **Orange River**
- What semi-precious stone decorated Tutankhamun's burial mask, and is the colour of the American Robin's eggs? **Turquoise**
- What is normally green, but can be yellow too, after a French herbal liqueur, introduced by Carthusian Monks in the 1700s? **Chartreuse** (the liqueur and the colour both have a yellow variety - the green liqueur is coloured by the plant pigment Chlorophyll)
- What is the colour Tyrian, dye highly prized by the Romans? **Purple** (Tyrian purple dye was produced by the ancient Phoenicians of Tyre, now Lebanon, from the mucus of Mediterranean sea snails)
- Name the London borough and Royal Observatory site which marks international time? **Greenwich**
- Prince Andrew served for twenty-two years with what organization? **Royal Navy**
- What pigment especially associated with oil painting, derives its name from heat treatment and a Tuscany city? **Burnt Sienna** (the earth from which it was originally produced was mined in Siena, Tuscany, Italy - the earth was burnt to increase its redness)
- Who was English King from 1650-1702? **William of Orange** (William III of Orange - he was also William II of Scotland)
- What would you find at 1600 Pennsylvania Avenue, Washington? **The White House**
- What is China's second largest river? **Yellow River**
- What is the negatively emphatic expression in the USA for the smallest amount of money? **Red cent**
- What college in New Cross is part of the University of London? **Goldsmiths** (fully, Goldsmiths College, University of London)
- Convert rawhide to leather? **Tan** (Latin tannum means oak bark, which was used in, and gave the name of, the tanning process)
- Name the low-cost private domestic airline based in Gurgaon, Haryana, India? **IndiGo Airlines**
- The Whirlwind is which snooker player's nickname? **Jimmy White**

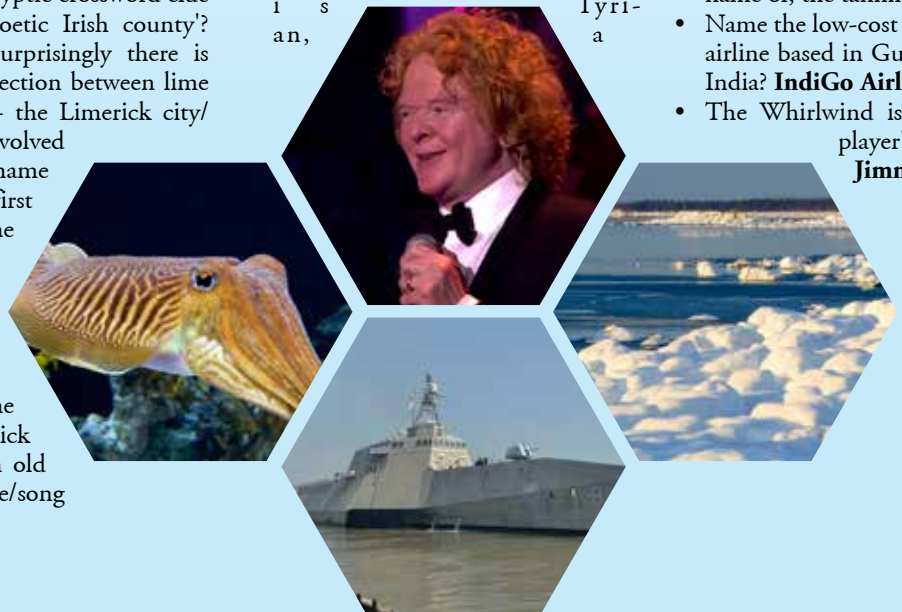

**https://www.businessballs.com/quiz/quiz-68-general-knowledge/**

डॉ. साहब,

प्रणाम।

चार दिवसीय विज्ञान शैक्षणिक यात्रा के बाद आज ज्यों ही रेवाड़ी अपने स्कूल पहुँचा तो मेरी टेबल पर आप द्वारा डाक से भेजी हुई 'शिक्षा सारथी' का अंक मिला, जिसमें मेरा एक आलेख भी था। इसके लिए आपका आत्मीय आभार!

पत्रिका मिलते ही उक्त यात्रा का आलेख एक बैठक में ही लिख गया, जो आपको करीब एक दर्जन छायाचित्रों सहित अभी-अभी मेल किया है, कृपया भविष्य में भी पत्रिका नियमित रूप से भेजेंगे-ऐसा विश्वास है। आपके कुशल संपादन में पत्रिका उत्तरोत्तर निखर रही है, बहुआयामी रचनात्मक सामग्री नए अंदाज-मिजाज में प्रकाशित हो रही है, जिसके लिए आप बधाई एवं साधुवाद के पात्र हैं। एक बार फिर अनंत आभार एवं ढेरों शुभकामनाएँ...

**आपका ही,**
**सत्यवीर नाहड़िया, प्राध्यापक रसायन शास्त्र**
**राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, खोरी, जिला- रेवाड़ी**

महोदय,

सादर नमस्कार।

मैंने आपके यहाँ से प्रकाशित 'शिक्षा सारथी' मासिक पत्रिका के कवर पेज की फ़ोटो फेसबुक मित्र की वॉल पर देखी। चूंकि मैं भी एक शिक्षक हूँ, अतः जिज्ञासा स्वाभाविक ही है। पत्रिका का मुखावरण आकर्षक लगा। एक मित्र से पता लगा कि यह पत्रिका ऐसी पठनीय सामग्री से परिपूर्ण है जो अध्यापक समाज के लिए बहुत उपयोगी है। कृपया इसके वार्षिक सदस्यता शुल्क की जानकारी के साथ ही एक नमूना प्रति निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

**भवदीय,**
**विनोद कुमार शर्मा**
**नई ब्रह्मपुरी**
**पोस्ट आफिस-मौलासर**
**जिला-नागौर, राजस्थान**
**पिन-341506**

(विनोद कुमार जी, 'शिक्षा सारथी' में रुचि दिखाने के लिए हार्दिक आभार। आपकी तरह अनेक पाठक पत्र लिखकर पत्रिका की वार्षिक सदस्यता संबंधी जानकारी माँगते रहते हैं। हम आपको बताना चाहते हैं कि 'शिक्षा सारथी' विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा द्वारा प्रदेश के सभी विद्यालयों में निःशुल्क रूप से वितरित की जाती है। इसके अंक बिक्री के लिए नहीं हैं। हाँ, प्रकाशित लेखों के लेखकों को डाक द्वारा इसकी प्रति अवश्य भेजी जाती है। यदि आपकी रचना इसमें प्रकाशित होती है तो यह आपको भी प्रेषित की जाएगी। वैसे, विभाग की वेबसाइट पर पत्रिका के सभी अंक उपलब्ध हैं, वहीं से देश-विदेश के पाठक इसे पढ़कर अपनी रचनाएँ अथवा प्रतिक्रियाएँ हमें भेजते हैं। आप भी वहाँ से इसे पढ़ सकते हैं। पत्रिका का लिंक है- http://www.schooleducationharyana.gov.in/Children/Shiksha-Saarthi-Magazine )

# पौधगिरी

हर एक पौधे को बचाना है,
सभी को जियो टैग कराना है।

पौधगिरी अभियान निराला,
पर्यावरण बचाने वाला।
हरा-भरा परिवेश बनाए,
कार्यक्रम ये सबसे आला।
देख रेख सबकी हो बढ़िया,
एक-एक पौधा अपनाना है...

मेरा पौधा सबसे अच्छा,
सोचेगा ये बच्चा बच्चा,
पेड़ बनेगा कल ये भारी,
पौधा जो लगाता अब कच्चा।
ये मेरा ये उसका पौधा,
ये सबके ही लब पर गाना है...

पौध लगा कर उसे सँभालें
खाद-पानी समय पर डालें।
वातावरण नहीं हो दूषित,
कल पर काज नहीं ये टालें।
बीस लाख से ज्यादा पौधे,
अभियान ये सफल बनाना है...

जब भी जाओ तुम सुबह स्कूल,
जाना नहीं पौधों को भूल।
नीर डाल कर उसे हटाना,
जमी अगर हो उस पर धूल।
हरियाली है बहुत जरूरी,
सबके मुख से ये कहलाना है...

**राजपाल सिंह गुलिया**
**जेबीटी अध्यापक**
**राजकीय प्राथमिक पाठशाला**
**काहड़ी**
**तहसील व जिला- झज्जर**

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

# जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
उषा जा न पाए, निशा आ ना पाए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

सृजन है अधूरा अगर विश्व भर में,
कहीं भी किसी द्वार पर है उदासी,
मनुजता नहीं पूर्ण तब तक बनेगी,
कि जब तक लहू के लिए भूमि प्यासी,
चलेगा सदा नाश का खेल यूँ ही,
भले ही दिवाली यहाँ रोज आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

मगर दीप की दीप्ति से सिर्फ जग में,
नहीं मिट सका है धरा का अँधेरा,
उतर क्यों न आयें नखत सब नयन के,
नहीं कर सकेंगे हृदय में उजेरा,
कटेंगे तभी यह अँधरे घिरे अब,
स्वयं धर मनुज दीप का रूप आए
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना
अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।

– गोपालदास 'नीरज'

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114